अध्याय 6

मसीही चलन
(भाग 2)

5:2—6:10 में मसीही चलन की पौलुस की चर्चा अन्य मसीहियों के लिए सहायक होने के लिए निर्देशों के साथ खत्म होती है (6:1-10)। प्रेरित ने अपने खुद के हाथ से प्रभु के विश्वासी बने रहने के लिए गलातियों को प्रोत्साहित करते हुए अपनी अंतिम टिप्पणियों के साथ पत्र को समाप्त किया (6:11-18)।

एक दूसरे का भार उठाना (6:1-10)

[1]हे भाइयो, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को संभालो, और अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो। [2]तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो। [3]क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है। [4]पर हर एक अपने ही काम को जांच ले, और तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा। [5]क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही बोझ उठाएगा। [6]जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे। [7]धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। [8]क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा। [9]हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे। [10]इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ।

एक लेखक के रूप में पौलुस की सबसे अधिक मेल खाती विशेषताओं में से एक यह थी कि लेख के मुख्य भाग में अलग-अलग निर्देश, प्रश्न और शिक्षाएं देने के बाद वह अपने पत्रों का समापन ''व्यावहारिक'' भाग के साथ ही करता था। वह अपने पाठकों को जो उसने सिखाया होता था, उसे व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित करना चाहता था। 6:1-10 में वह यह दिखाने के लिए आगे बढ़ा कि आत्मिक सोच वाले व्यक्ति को कलीसिया में और संसार में अपने सामने आने वाली विभिन्न परिस्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

आयत 1. एक बार फिर से पौलुस ने गलातिया के मसीहियों को **हे भाइयो** कहकर सम्बोधित किया (1:2, 11 पर टिप्पणियां देखें)। कलीसिया में अभी अभी झगड़े और डाह को डांटने के बाद (5:26), उसने एक दूसरे की परवाह और चिंता करने की वकालत की जो कि

परमेश्वर के लोगों की पहचान होनी चाहिए। उसने एक ऐसी परिस्थिति की कल्पना की जिसमें साथी मसीही **किसी अपराध में पकड़ा** जाता है। ''पकड़ा'' यूनानी शब्द *prolambanō* से निकला है जिसे यहां दो प्रकार से समझा जा सकता है। इसका अर्थ किसी के पाप के द्वारा ''पकड़े जाना'' हो सकता है (KJV) या इसका अर्थ यह हो सकता है कि किसी का पाप कलीसिया के अन्य लोगों के द्वारा ''पता लगाया'' जाता है (NRSV)। सम्भवतया यहां पर पहले वाला विचार है चाहे बाद वाले विचार का अर्थ निकाला जा सकता है क्योंकि हस्तक्षेप करने के लिए दूसरे मसीहियों को पाप का पता होना आवश्यक होना था। ''अपराध'' के लिए शब्द *paraptōma* है जो ''गलत कदम'' या ''बड़ी भूल'' का यानी ''पाप'' या ''गलती'' का संकेत देता है। इस कठिन विषय पर बात करते हुए पौलुस ने अपने आपको बड़ी सावधानी से (और परवाह करते हुए) व्यक्त किया। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि इसमें एक भाई या बहन शामिल थी यानी मसीह की कलीसिया का साथी सदस्य शामिल था।

यहां पर इस्तेमाल हुई भाषा यूहन्ना 7:53—8:11 वाली स्त्री का स्मरण दिलाती है[1] जो ''व्यभिचार करते पकड़ी गई [*katalambanō*] थी'' (यूहन्ना 8:4)। इस कहानी में यीशु का रवैइया उस ढंग का उदाहरण देता है कि मसीही लोगों को किसी साथी विश्वासी को जो किसी अपराध में पकड़ा गया हो बहाल करना चाहते हैं, तो उन्हें क्या करना चाहिए। स्त्री पर आरोप लगाने वाले लोग शास्त्री और फरीसी थे जो मूसा की व्यवस्था के लिए बड़े उत्साही थे। उन्होंने यह कहते हुए यीशु की परख की कि ''व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों पर पथराव करें। अत: तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है ?'' (यूहन्ना 8:5)। उन्हें असल में उस स्त्री या व्यवस्था की कोई परवाह नहीं थी बल्कि उनका असल इरादा तो यीशु को फसाने का था। वह उस स्त्री के आरोप लगाने वालों के सब पापों सहित उनके मनों को, यहां तक कि उनके गुप्त पापों को भी जानता था। उसने उन्हें चुनौती दी, ''तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे'' (यूहन्ना 8:7)। बूढ़े से लेकर जवान तक सब ने यही निर्णय लिया कि चुपके से निकल जाने में ही समझदारी है।

इस कहानी में खुलने वाले भेद पर ध्यान देने पर हमें तीन सच्चाइयां स्पष्ट नज़र आती हैं। पहली यह कि पापी मनुष्य अपने पड़ोसी पर अंतिम निर्णय देने के योग्य नहीं है। दूसरी, हमारे धर्मी प्रभु ने जो खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया था (लूका 19:10), दण्ड देने वाला निर्णय देने से इनकार कर दिया, हालांकि अपराध उसके सामने खड़ा था। ऐसा नहीं था कि उस स्त्री का दोष कम था क्योंकि एक दिन उसके आरोप लगाने वालों के साथ साथ उसे और हमें अंतिम समय उसके सामने खड़े होना है। हमें तसल्ली यह है कि वह जो कि हमारा न्यायी है दण्ड देना नहीं बल्कि धर्मी ठहराने की इच्छा रखता है। असल में यह यीशु जो हमारा दयालु छुड़ाने वाला है, के जीवन का उद्देश्य ही था कि उसने हमारे छुटकारे के लिए क्रूस पर सबसे बड़ी कीमत चुका दी (रोमियों 8:32-39)। तीसरा, यीशु ने उस स्त्री को वहीं नहीं छोड़ दिया जहां वह आत्मिक रूप में पहले से थी। इसके बजाय उसे मन फिराने को कहा। उसने कहा, ''जा और फिर पाप न करना'' (यूहन्ना 8:11ख)।

पौलुस ने क्या कहा कि ''किसी अपराध में पकड़ा'' जाने वाले के साथ व्यवहार के लिए कौन ज़िम्मेदार था? जो लोग ''आत्मिक'' हैं। परमेश्वर के भक्त का लक्ष्य दूसरों को दोषी

ठहराना नहीं होता। ऐसा व्यवहार रखने वाले चाहे उन्हें इस बात का अहसास हो या न, आरोप लगाने वाले यानी शैतान के साथ मिले हुए होते हैं (प्रकाशितवाक्य 12:10; देखें अय्यूब 1:6-12)। दुष्ट के जीवन का यही उद्देश्य है और अच्छे से अच्छे में इतना पाप तो निकल ही आता है कि वह आसानी से उनके विरुद्ध आरोप लगा सके।

आत्मिक व्यक्ति, जिसमें परमेश्वर का आत्मा वास करता है, से आग्रह किया गया है कि ऐसे भाई को जो पाप में पकड़ा गया हो **नम्रता के साथ ऐसे को सम्भालो**। ''सम्भालो'' (*katartizō*) का अर्थ किसी चीज़ को उसकी पहले वाली काम करने की स्थिति में लौटाना है। मत्ती 4:21 और मरकुस 1:19 में इसका इस्तेमाल मछली पकड़ने वाले जालों को ''सुधारने'' के लिए किया गया है। ''नम्रता'' के लिए (*prautēs*) शब्द का इस्तेमाल ''दीनता'' भी हुआ है (KJV), यह वही शब्द है जो आत्मा के फल के रूप में मिलता है (5:23 पर टिप्पणियां देखें)।

पौलुस ने ऐसे भाई को जिसने पाप किया हो वापस लाने की इच्छा करने वालों के लिए सावधानी बरतने की बात कही: **अपनी भी चौकसी रखो कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।** शैतान जो कि हमारा विरोधी और पाप का उकसाने वाला है, जानता है कि परमेश्वर के लोगों के बीच में आवश्यक कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए उन्हें पाप करने की परीक्षा में कैसे डालना है। ऐसी परिस्थितियों में कोई कौन से पाप करने की ''परीक्षा'' में पड़ सकता है? अपने धार्मिक होने का गर्व या घमण्ड दिखाकर इस सूची में सबसे ऊपर हुआ जा सकता है। कैनथ एल. बोल्स ने ध्यान दिलाया कि ''आत्मिक'' मसीही व्यक्ति का लक्ष्य ''दण्ड देना, निर्दोष साबित करना, या बदला लेना नहीं है।'' बल्कि ''भटकी हुई भेड़ों को बचाकर बाड़े में वापस लाना है।''[2] इसी लिए इस काम के लिए ''नम्रता'' का होना आवश्यक है।

आयत 2. गलती करने वाले को सुधारने के अलावा पौलुस ने यह ताड़ना की: **तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो।** यह आयत स्वाभाविक रूप में इससे पहली आयत के बाद आती है, दूसरों का भार उठाने का विचार धारणात्मक रूप में क्रूस पर यीशु की मृत्यु से मेल खाता है। बेशक इसे उसके अभिप्राय, महत्व या परिणामों में उसके साथ नहीं मिलाया जा सकता। आखिर जो भार उसने सहा था वह खोए हुए समस्त संसार के पाप का भार था। उसका क्रूस आत्मिक होने के साथ साथ सचमुच में बुरी तरह से शारीरिक था। हम उस अनुभव की कल्पना भी नहीं कर सकते जिसमें परमेश्वर का पवित्र जन पाप का ही रूप बन गया। ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को [परमेश्वर] ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में यह सबसे अद्‌भुत और समझ से बाहर कथनों में से एक है।

अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने उस लाक्षणिक क्रूस की बात करने से संकोच नहीं किया जिसे उसके चेलों को उठाने के लिए कहा जाना था। चाहे यह ताने सहना हो, अपने परिवार के लोगों की दुश्मनी हो, सताव हो, यातना हो या मृत्यु हो। यीशु ने कहा, ''जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं'' (मत्ती 10:38)। गलातियों 6:2 केवल एक और संकेत है कि प्रभु के नमूने को मानने से कैसे कैसे बोझ उठाने पड़ सकते हैं। मसीही व्यक्ति के लिए उन बोझों को उठाने के लिए तैयार रहना आवश्यक है जिनके नीचे उसका भाई दबा जाता हो। यूनानी शब्द *baros* किसी ऐसी चीज़ का संकेत देता है जो भारी और कठोर हो। रॉबर्ट एल. जॉनसन

ने कहा है कि ''पौलुस की भाषा इतनी विशाल है कि इसमें हर प्रकार का बोझ समा सकता है। कोई भी क्लेश, दुख, पाप, कमज़ोरी या निजी दुर्बलता यहां [अपना] अर्थ के दायरे में आ जाती है।''[3] ताड़ना चाहे पारस्परिक हो सकती है (''एक दूसरे की'') परन्तु पौलुस के मन में किसी निर्बल भाई द्वारा सहे जाने वाले क्लेश हो सकते हैं।[4] यीशु ने खोए हुए समस्त संसार को छुड़ाने के लिए मानवीय रूप में दुर्गम भारों को उठाया, इसलिए हमें उसी का अनुसरण करते हुए जो कुछ हमारे भाइयों की सहायता के लिए आवश्यक हो, करना चाहिए।

''मसीह की व्यवस्था'' वाक्यांश से काफ़ी चर्चा हुई है। पौलुस ने पहले ही कहा था कि ''जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है'' (5:24)। इस कारण जो व्यक्ति सचमुच में यीशु के पीछे चलने की इच्छा रखता है वह अपनी मानवीय लालसा के द्वारा नहीं चलेगा। एक और जगह पौलुस ने लिखा है कि मसीही लोगों ने ''पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसर ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है'' (कुलुस्सियों 3:9, 10)। यह ''नया मनुष्यत्व'' ही बताता है कि किसी जरूरतमंदों भाई या बहन को किस प्रकार से जवाब देना है।

नये नियम में ऐसा नहीं है कि जहां जहां ''व्यवस्था'' (*nomos*) शब्द है वहां इसका अर्थ एक ही हो। एक सामान्य अर्थ ''मूसा की व्यवस्था'' है। इस मामले में ''व्यवस्था'' इब्रानी बाइबल के उपभाग के रूप में ''व्यवस्था और भविष्यवक्ता'' (लूका 16:16) और ''मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं और भजन की पुस्तकों'' (लूका 24:44) जैसे वाक्यांशों में मिलती है। यह अभिव्यक्तियां इस्राएल के साथ परमेश्वर की पुरानी वाचा के लिए है।

परन्तु सुसमाचार कुछ अलग ही है। यह वह नई वाचा है जिसे यिर्मयाह ने पहले से देखा था। परमेश्वर ने कहा कि इस वाचा के द्वारा वह अपने लोगों के अपराधों को क्षमा कर देगा और उनके पापों को फिर स्मरण न करेगा (यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 8:12)। व्यवस्था पूरी तरह से क्षमा नहीं कर पाई, ''क्योंकि अनहोना [था], कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने बहुत ही स्पष्ट कर दिया कि केवल मसीह का लहू ही पापियों को पवित्र बना सकता था (देखें इब्रानियों 10:10, 14)।

''मसीह की व्यवस्था'' को सम्भवतया ''प्रेम की व्यवस्था'' (देखें 5:14) के रूप में समझा जाना चाहिए, जो परमेश्वर द्वारा अपनी संतान को दिए जाने वाले सब दानों में से बड़ा है (1 कुरिन्थियों 12:31ख—13:13)। यह वही नियम है जिसकी पुष्टि यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान की। यह पूछे जाने पर कि व्यवस्था में सबसे बड़ी आज्ञा क्या है, उसका उत्तर था:

> ... तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं (मत्ती 22:37-40; देखें लैव्यव्यवस्था 19:18; व्यव. 6:5)।

नये नियम में प्रेम पर, इसकी समानताओं पर, और जीवन में यह कैसा दिखाई देता है इस

पर बहुत सी शिक्षा पाई जाती है, परन्तु इसे इतना सजीव ढंग से और कहीं भी नहीं दिखाया गया जितना गुलगुता के भयानक क्रूस पर यीशु के प्राण देने के दृश्य में दिखाया गया है। मुक्ति दिलाने वाले इस प्रेम से उसके चेलों के जीवन बदल जाने आवश्यक हैं। यूहन्ना ने इसे इस प्रकार से कहा है:

> हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए। पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? (1 यूहन्ना 3:16, 17)।

यूहन्ना के लेखों में प्रेम पर और भाइयों के बीच यह कैसा लगता है इस पर बहुत कुछ कहा गया है। परन्तु शायद किसी भी अन्य वचन में उसने शायद इतना बारीकी से पहले नहीं लिखा जितना गलातियों 6 के पौलुस के संदेश में है।

इन पहली कुछ आयतों में पौलुस ने यह तय कर दिया कि पाप में पड़े किसी भाई के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो। संघर्ष कर रहे मसीही के साथ, कोमलता के साथ व्यवहार करना चाहिए जो आत्मा का फल है जिसमें आत्मा की सामर्थ की झलक हो। सहायता पाने की इच्छा करने वालों के लिए चौकसी करनी आवश्यक है ताकि ऐसा न हो कि कोई निर्मोही व्यवहार उन पर हावी हो जाए। ऐसा न कर पाना पाप करना होगा और अपने पूरे उद्देश्य को उसके साथ मिलाने के लिए बिगाड़ देना होगा।

आयत 3. पौलुस ने आत्मिक घमण्ड के विरुद्ध चेतावनी दी। किसी भाई की जिसने पाप किया हो, सहायता करने वाले लोग अपने आपको उससे बेहतर महसूस करवाने के लिए अपने अहंकार को आड़े नहीं आने दें। **यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है।** ''सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23); क्षमा और उद्धार के लिए सब लोग यीशु मसीह के बलिदान पर निर्भर हैं। कोई अपने आपको कैसा देख सकता है और वास्तव में वह कैसा है, स्पष्ट अंतर आयत 3 में दिखाया गया है।[5]

आयत 4. ''अपने ऊपर दोष लगाने के लिए दूसरों के दोषों को नमूने के रूप में'' इस्तेमाल करने के बजाय[6] **हर एक अपने ही काम को जांच ले।** इस संदर्भ में, यूनानी शब्द (*dokimazō*) का अर्थ है ''सत्यता को जांचना'' ''आलोचनात्मक ढंग से जांच करना।'' यह वही शब्द है जिसका इस्तेमाल प्रेरित ने यह कहते हुए किया कि प्रभु भोज खाने से पहले ''मनुष्य अपने आपको जांच ले'' (1 कुरिन्थियों 11:28)। यह शब्द पौलुस की इस ताड़ना में भी मिलता है कि ''अपने आपको परखो कि विश्वास में हो कि नहीं! अपने आपको जांचो'' (2 कुरिन्थियों 13:5क)। ''अपने ही काम को'' परखना (*ergon*) यानी अपने ही कामों और अपनी प्राप्तियों को परखना आवश्यक है। पौलुस ने कहा कि **तब दूसरे के विषय में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा।** NIV में इसे इस प्रकार कहा गया है, ''तब वे अपनी तुलना किसी दूसरे से किए बिना केवल अपने आप में घमण्ड कर सकते हैं।'' NLT में है, ''क्योंकि फिर तुम्हें अच्छी तरह किए जाने वाले काम की संतुष्टि मिलेगी और तुम्हें अपनी

तुलना किसी दूसरे से करने की आवश्यकता नहीं होगी।'' यदि किसी के पास घमण्ड करने का कारण है तो उसे चाहिए कि इसे अपने तक ही रखे (देखें 6:14)।

आयत 5. मसीही लोगों को चाहे ''एक दूसरे का भार उठाने'' के लिए कहा गया है (6:2), पर **हर एक व्यक्ति** से **अपना ही बोझ** उठाने के लिए कहा गया है। पौलुस ने इस भाग में ''भार'' (*baros*) और ''बोझ'' (*phortion*) के लिए दो अलग अलग शब्दों का इस्तेमाल किया। *Baros* उस भार के विचार पर ज़ोर देता है जो आम तौर पर दमनकारी होता है। अंग्रेज़ी शब्द ''बैरोमीटर'' जिसका अक्षरश: अर्थ ''भार का नाप'' है, वायुमण्डलीय दबाव को तय करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरण को कहा जाता है। आधुनिक यूनानी में *बेरोस* के अर्थ के दायरे को गुरुत्वाकर्षण, विशेष गुरूताकर्षण, शारीरिक भार बढ़ने, काम के जोर (अधिक भार या बड़े काम) (जैसे मत्ती 20:12 में), किसी के लिए बोझ बनने, ज़िम्मेदारी के बोझ, कर निर्धारण के दबाव जैसी अवधारणाओं सहित आधुनिक संसार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विस्तार दिया गया है। इनमें से किसी भी अर्थ में उन चीज़ों की कल्पना करना कठिन नहीं है जो किसी के मन पर बोझ डालकर उसकी चिंता या तनाव को बढ़ाती हैं।

Phortion शब्द किसी ऐसी चीज़ पर ज़ोर देता है जिसे ले जाया जाता या उसकी ढुलाई होती है जैसे किसी जहाज का ''माल'' (प्रेरितों 27:10)। संदर्भ पर निर्भर करता है कि यह, ''बोझ'' भारी है (मत्ती 23:4) या हल्का (मत्ती 11:30)। स्पष्टतया *phortion* अपने कुछ उपयोगों में *baros* का समानार्थी ही है जबकि अन्य उपयोगों में नहीं। ऐसा लगता है कि पौलुस इन अलग अलग शब्दों का इस्तेमाल करके इस संदर्भ में अंतर बना रहा था। यदि ऐसा है तो *baros* जीवन की अत्यंत परेशानियों को दर्शाता है (इतना भारी जिसे अकेले उठाना कठिन हो) जबकि *phortion* हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों (हमारे मामूली कर्त्तव्यों) को दर्शाता है। इस विचार को इस तथ्य से समर्थन मिलता है कि *phortion* का इस्तेमाल यूनानी साहित्य में कई बार मनुष्य के बोझ के लिए किया जाता था।[7] इसलिए, जे. बी. फिलिप्स ने गलातियों 6:5 का यह अनुवाद बताया: ''हर मनुष्य के लिए 'अपने बोझ के लिए अपना कंधा' देना आवश्यक है।''

इस व्याख्या का एक प्रकार यह है कि 6:5 में अंतिम न्याय की बात है। यह समझ यूनानी धर्मशास्त्र में कालों में होने वाले बदलाव पर आधारित है। दोनों आयतों में क्रिया शब्द ''उठाना'' को (*bastazō*) से लिया गया है। आयत 2 में उस क्रिया (''उठाओ'') का वर्तमानकाल है जबकि आयत 5 में भविष्यकाल (''उठाएगा'')। हो सकता है कि पौलुस यह कह रहा हो कि जीवन की कठिनाइयों में एक दूसरे की सहायता करना मसीही लोगों का दायित्व है परन्तु अंत में हर कोई अपने ही किए कामों के लिए जवाबदेह ठहरेगा। बेशक यह विचार नये नियम की शिक्षा के साथ मेल खाता है। रोमियों 14:12 संकेत देता है कि ''हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।'' इसके अलावा 2 कुरिन्थियों 5:10 कहता है, ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किया हों पाए।''

आयत 6. 6:1-5 में पौलुस ने किसी ऐसे भाई के साथ जो पाप में गिर गया हो, करूणामय व्यवहार की बात की, बजाय इसके कि ऐसे अवसर का इस्तेमाल अपनी शान बढ़ाने, प्रतिस्पर्धा करने या शेखी मारने में किया जाए। 6:6-10 में उसने आगे बताया कि आत्मा के चलाए चलने

और साथी मसीहियों को सम्भालने के लिए क्या आवश्यक है। परन्तु उसने यह कहते हुए कि **जो वचन की शिक्षा पाता है, वह सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को भागी करे** वचन के सेवकों को आर्थिक सहायता देने की चिंता के क्षेत्र को बदल दिया।

पौलुस मसीही लोगों को उन्हें जिन्होंने उन्हें सुसमाचार बताया था, अपने साथ ''भागी'' करने को प्रोत्साहित कर रहा था। असल में ''सिखाने वाला'' अज्ञात है। पौलुस ने यह स्पष्ट नहीं किया कि जिस शिक्षक की सहायता की जानी थी वह प्रेरित था, भविष्यवक्ता था या प्राचीन या सुसमाचार प्रचारक या कलीसिया का कोई साधारण सदस्य। न ही उसने यह कहा कि सिखाने वाले के पास कोई करिश्माई दान होना चाहिए था या उसे अपने स्वाभाविक गुण की योग्यता से, या यह कि वह अपने स्वाभाविक गुण, पहले सीखे या अनुभव से सिखाए जाने के द्वारा, उसने यह नहीं संकेत दिया कि सिखाने वाला कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसे इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए कलीसिया द्वारा नियुक्त किया गया हो। शायद यह अस्पष्टता जानबूझकर रखी गई ताकि इस नियम को व्यापक प्रासंगिकता मिल सके।

प्रेरितों, प्राचीनों और सुसमाचार प्रचारकों की सहायता पर नये नियम में अन्य वचनों में बात की गई है। जब यीशु ने बारह प्रेरितों को सीमित आज्ञा देकर भेजा था, तो उनके लिए अपने भोजन और रहने के लिए मेजबानों पर निर्भर रहना आवश्यक था। प्रभु ने समझाया कि ''मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिए'' (मत्ती 10:10)। यह बात उसने अनिवार्य रूप में उन सत्तर चेलों को कही थी जब उन्हें सीमित आज्ञा देकर भेजा था: ''उसी घर में रहो और जो कुछ उनसे मिले वही खाओ पियो क्योंकि मजदूर को अपनी मज़दूरी मिलनी चाहिए'' (लूका 10:7क)। पौलुस ने प्रचार करने वालों की उनके सुनने वालों के द्वारा आर्थिक सहायता की बात करके उनके हक्क का बचाव किया, चाहे वह खुद इस हक का इस्तेमाल नहीं करता था।[8] 1 कुरिन्थियों 9:1-18 में उसके तर्क को पूरी तरह से विस्तार दिया गया है। उस वचन के अंदर उसने कहा, ''प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उन की जीविका सुमसाचार से हो'' (1 कुरिन्थियों 9:14)। 1 तीमुथियुस 5:17 में भी पौलुस ने लिखा, ''जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं।''

मसीह के संदेश को सीखने वालों से कहा गया है कि वे अपनी चीज़ों में उन्हें ''भागी'' (*koinōneō*) बनाएं जो मण्डली को परमेश्वर का वचन बताते हैं। सुसमाचार की इस सांझ से आम तौर पर दूसरों को संदेश सुनने का अवसर मिल जाता है और वे मसीह को जानने लगते हैं। ऐसी सांझ परमेश्वर की नकल करना है जिसने हमारे साथ अपने प्रिय पुत्र को बांटा।

आयत 7. बोने और काटने से सम्बन्धित इन आयतों को पाठकों को अपने सिखाने वालों को उनके काम का मेहनताना देने के लिए प्रेरित करने का तर्क देने के लिए दिया गया हो सकता है। फिर दोबारा से, इन आयतों को प्रेम के कारण परमेश्वर का भय मानने वाले भक्तिपूर्ण व्यवहार को अधिक सामान्य कथन के आत्मिक समृद्धि के सम्बन्ध में रूप में समझा जा सकता है। आखिर इस संदर्भ में ''मसीह की व्यवस्था'' की ही तो बात हो रही है।

पौलुस की **धोखा न खाओ** की चेतावनी पवित्र शास्त्र में आम है।[9] धोखे की बात बहुत पीछे अदन की वाटिका तक चली जाती है जहां हव्वा ने शैतान द्वारा भरमाए जाने से सांसारिक सुन्दरता, शारीरिक इच्छा और स्वार्थी घमण्ड पर ध्यान लगा लिया था। उसने और आदम ने

परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी और उसके कठोर परिणाम भुगते। वे परमेश्वर से अलग हो गए, उन्हें वाटिका के स्वर्गलोक में से निकाल दिया गया और अंत में वे मर गए (उत्पत्ति 3:1-24; 5:5)।

परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता। कोई पाप करके दण्ड से मुक्ति नहीं पा सकता या परमेश्वर का अपमान करके दण्ड से बचने की उम्मीद नहीं कर सकता। ''ठट्ठा'' के लिए शब्द (*muktērizō*) का अर्थ मूलतया ''नाक चढ़ाना'' है।[10] ऐसा ही एक शब्द लूका 23:35 में मिलता है जहां यीशु के क्रूस पर टंगे होने के समय यहूदी अगुओं ने उसका ''ठट्ठा'' उड़ाया था। बैन विट्रिंगटन तृतीय का मानना था कि किसी पर नाक चढ़ाना उसे लज्जित करने और उससे इस प्रकार व्यवहार करना था ''जैसे कोई कमज़ोर, जैसे कोई अपनी ही प्रतिष्ठा से नीचे हो और जैसे कोई आदर के अयोग्य हो।''[11]

क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा भौतिक संसार से लिया गया नियम है जो आत्मिक क्षेत्र में भी लागू होता है। सृष्टि के तीसरे दिन परमेश्वर ने ''फलदायी वृक्ष जिनके बीज *एक एक की जाति के अनुसार* उन्हीं में से होते हैं'' (उत्पत्ति 1:12)। जब किसी विशेष प्रकार का बीज बोया जाता है तो उपज भी उसी बीज की किस्म के अनुसार ही काटी जाती है (देखें अय्यूब 4:8; नीतिवचन 22:8)।

पौलुस के समय में अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से खेतीबाड़ी पर निर्भर थी, जिस कारण बोने और काटने के रूपकों को आसानी से समझा जा सकता था। इसके अलावा पत्र में इस बात के द्वारा पौलुस के पाठकों ने उसके रूपकों को उसके वास्तविक अर्थ में बदलने के बारे में काफ़ी सुन रखा होगा। बेशक, खेतीबाड़ी के अलावा और भी पेशेवर लोग होते होंगे। मसीही तथा समाज के अन्य लोग कारोबारियों, बढ़इयों, दर्जियों, साहूकारों, न्यायियों, राजनेताओं, शिक्षकों, राजगिरों, तथा अन्य कामों में लगे होते थे। इसके बावजूद गलातिया जैसे प्रांत के नगरों में लोग खेतीबाड़ी से इतने दूर नहीं रहते होंगे कि उन्हें पौलुस की बात का मतलब पता न हो।

इस नियम की प्रासंगिकता चाहे व्यापक है पर पौलुस अभी भी उन लोगों के साथ सांझ करने की आवश्यकता की बात सोच रहा होगा जो सुसमाचार सिखाते हैं (6:6)। 2 कुरिन्थियों 9:6 में उदारता से देने को प्रोत्साहित देने के लिए उसने काटने और बोने के रूपक का इस्तेमाल किया: ''परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।'' उस संदर्भ में जोर बीज की मात्रा पर है जबकि गलातियों 6:7 में बीज कि किस्म पर (देखें मत्ती 13:24-30)।

आयत 8. आयत 8 में भाषा बदल जाती है, जिसमें जोर बीज की किस्म के बजाय खेत की किस्म पर हो जाता है। बोने वाले को ''दो बिल्कुल अलग अलग खेतों में बीज डालने'' का विकल्प दिया जाता है, ''और इन दो अलग अलग खेतों से वह खेतों की किस्म के अनुसार कटाई करता है।''[12] पहला विकल्प नकारात्मक है: **जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा।** यहां पर खेत ''अपने शरीर'' को कहा गया है। पौलुस अपने पाठकों को अपने जीवनों पर ध्यान करके यह सुनिश्चित करने की चुनौती दे रहा था कि कहीं वे ''शरीर के कामों'' के अनुसार तो नहीं जी रहे (5:19-21)। अपने आपको दुनियावी, सांसारिक, मनमर्जी का जीवन गुजारने के लिए दे देना आत्मिक रूप में मरे हुए के जैसा होने के बराबर है। पौलुस ने पहले ही कह दिया था कि ऐसा जीवन जीने वाले लोग ''परमेश्वर के राज्य के वारिस

न होंगे'' (5:21)। यहां उसने कहा कि वे ''विनाश की कटनी काटेंगे।'' यह नरक में अनन्त दण्ड की बात करने का एक और ढंग है।

दूसरा विकल्प सकारात्मक है: **जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।** यहां पर खेत ''आत्मा'' को कहा गया है। इस जीवन में, जो व्यक्ति आत्मा के चलाए चलता है (5:16, 25), ''आत्मा का फल'' देता है (5:22, 23), उसे परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अनन्त जीवन मिलेगा।

रोमियों 8:5-7 में पौलुस ने ''शरीर'' और ''आत्मा'' में अंतर के साथ साथ उनके फलों को भी बताया:

> क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं। शरीर पर मन लगाना तो *मृत्यु* है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना *जीवन और शान्ति* है; क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न हो सकता है।

यह वचन हमें स्पष्ट रूप से स्मरण दिलाता है कि पौलुस ने इस विषय पर गलातिया के भाइयों को क्या बताया। शारीरिक सोच के विद्रोही व्यवहार पर उसने बिल्कुल यही कहा था:

> पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन रहे (5:16-18)।

इन दोनों संदर्भों की समानताएं चौंकाने वाली हैं। दोनों वचनों में बताया गया है कि विद्रोही मन यहां बताए गए विभिन्न ''नियमों'' पर कैसे प्रतिक्रिया देता है। निश्चय ही यह हर उस बात को नकारता है जो इसकी अपनी सांसारिक या दुनियावी इच्छाओं के रास्ते में आती हैं। शारीरिक मन दरअसल विरोध करने वाला, मनमर्जी करने वाला है। यह परमेश्वर का वैरी और उसके नियम को न मानने वाला है। ऐसी सोच इसकी अपनी हठी और फूले हुए *आपे* के बीच आने वाली किसी भी बात को नकार देती है! आवश्यक नहीं कि इसका अर्थ यह हो कि ऐसा व्यक्ति हमेशा अप्रिय, चिड़चिड़ा या गुस्ताख ही होगा। इसके विपरीत उसका झुकाव दिखावटी चापलूसी या बनावटी लगाव हो सकता है। वह अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपने आपको बढ़ावा दे सकता है या अपनी स्वार्थी लालसा को पूरा करने के लिए पेशेवर, सामाजिक, राजनैतिक, या आर्थिक लक्ष्य को पाने के लिए शक्तिशाली लोगों का भरोसा जीतने की कोशिश कर सकता है। वह कई तरीके इस्तेमाल कर सकता है परन्तु उसकी मंजिल हमेशा खुदगर्जी वाली और ''शारीरिक'' (यानी इस संसार की) ही होगी।

आयत 9. हम भले काम करने में साहस न छोड़ें (*mē enkakōmen*) उत्तम पुरुष बहुवचन है, यानी वह रूप जिसमें अपने श्रोताओं के साथ लेखक (या वक्ता) शामिल है। शिक्षा के इन शब्दों में पौलुस ने गलातियों के साथ अपने आपको शामिल किया। ''साहस छोड़ना'' के लिए यूनानी शब्द शाब्दिक रूप (*enkakeō*) से लिया गया है। इसका अनुवाद ''थक जाना''

(NRSV) या "थकना" (NLT) के रूप में भी हो सकता है। विचार "आचरण के वांछित नमूने में बने रहने की प्रेरणा खो देना," "जोश खो देना," "निराश होना" का है।[13]

भले काम करने में वाक्यांश आरम्भ में सामान्य लगता है कि इसे लगभग हर किसी चीज़ पर लागू किया जा सकता है। परन्तु इस संदर्भ में फोकस अभी भी आत्मा के अनुसार चलने पर है (5:16, 18, 25; 6:8)। यदि पौलुस के मन में कोई और स्पष्ट बात होती तो वह इसके साथ की आयतों में तुरन्त सामने आ जाती जैसे भटके हुए को सम्भालना (6:1), दूसरों का बोझ उठाना (6:2), अपना ही भार उठाना (6:5), और आखिर में वचन को सिखाने वालों की अधिक सहायता करना (6:6)।

खेतीबाड़ी सम्बन्धित अपने रूपक में पौलुस ने आगे यह प्रेरणा दी: **क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।** आत्मिक सोच वाले व्यक्ति को एक आदर्शवादी ढंग में देखना जिसमें यह मसीही व्यक्ति को कोमल, शांत व्यवहार वाले व्यक्ति तक सीमित कर दे, जो "वास्तविक संसार" में किसी भी प्रकार के हालात के बावजूद अडोल रहे, खतरनाक है। परन्तु पौलुस से बेहतर और कोई नहीं जानता था कि आत्मा को बढ़ावा देने की बात मानना और प्रभु की इच्छा को पूरी करने की कोशिश करते रहना कठिन और दबाव डालने वाला हो सकता है। फिर भी उसका विश्वास था कि प्रयास करने का लाभ है। "परिश्रम करने वाले किसान" की तरह (2 तीमुथियुस 2:6) मसीही व्यक्ति अंत में भरपूर फसल "काटेगा" यदि वह "ढीलान हो" (*ekluō*) यानी न "हिम्मत हारे" (NKJV) या न "छोड़े" (NIV)।

आयत 10. पौलुस ने एक दूसरे का भार उठाने की छोटी इकाई के साथ साथ (6:1-10) मसीही चलन के अपने बड़े भाग (5:2—6:10) को बड़ी आज्ञा के साथ समाप्त किया। उसने आरम्भ किया **इसलिये जहां तक अवसर मिले।...** "अवसर" के लिए यूनानी शब्द (*kairos*) वही शब्द है जिसका अनुवाद 6:9 में "ठीक समय" हुआ है। उस आयत में यह शब्द मसीह के वापस आने के समय अनन्त जीवन की कटनी से सम्बन्धित है। यहां यह परमेश्वर द्वारा दिए उन क्षणों का संकेत देता है जो जलवायु की उस घटना तक ले जाते हैं।

पौलुस ने अपने भाइयों को इस संसार में जीवन के थोड़ी देर तक का होने और हर कीमती पल में पाई जाने वाली क्षमता को याद दिलाया। हमें समय दिया गया है ताकि हम प्रभु की सेवा कर सकें और उसके नाम को फल ला सकें। समय बरबाद करना भयानक बात है। समय प्रबन्धन के सम्बन्ध में इफिसियों 5:15, 16 में प्रेरित ने लिखा, "इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों की नाईं नहीं पर बुद्धिमानों की नाईं चलो। और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।" यह वचन मूलतया "वापस खरीदने" या "अवसर का लाभ उठाने" की बात करता है। उस वाक्यांश में इस्तेमाल हुआ क्रिया शब्द (*exagorazō*) संज्ञा शब्द (*agora*) पर आधारित है जो "मार्केट" या "बाज़ार" का अर्थ देता है। सामान्य क्रिया (*agorazō*) का अनुवाद मूलतया "बाज़ार करो," "खरीदो," या "खरीदना" है जबकि इसके तीव्र रूप *exagorazō* का सम्बन्ध "सारे का सारा खरीदना" या "फायदा उठाना" (यहां पर "समय" या "अवसर") है। समय जीवन का सार ही है और इसका इस्तेमाल दूसरों की सेवा करने और उद्धार के शुभ समाचार को फैलाने के लिए समझदारी से किया जाना चाहिए। मसीह के द्वितीय आगमन को ध्यान में रखते हुए मसीही लोगों को सुसमाचार प्रचार की ज़रूरत

का अहसास होना चाहिए।

आज्ञा देते हुए पौलुस ने कहा, **हम ... भलाई करें।** ... यहां ''भलाई करने'' के लिए चाहे 6:9 से अलग यूनानी शब्दों का इस्तेमाल हुआ है परन्तु विचार वही है कि मसीही लोगों को वैसे काम करने के लिए कहा गया है जो दूसरों के लाभ के लिए हों, जिनसे उनके जीवन बेहतर बन सकें। ''भलाई'' (*agathos*) करना आत्मा के अनुसार चलने से होता है। यूनानी शब्द उसी शब्द परिवार से है जिसका अनुवाद 5:22 में आत्मा के फल की सूची में ''भलाई'' (*agathōsunē*) किया गया है।

जिस प्रकार से यीशु ''सारे जगत के लिए मरा'' (1 यूहन्ना 2:2) और सुसमाचार ''सब जातियों'' के लिए है (मत्ती 28:19), उसी प्रकार से मसीही लोगों को **सब के साथ** भलाई करने को कहा गया है। सेवा करने के कार्यों से दूसरों के लिए उद्धार दिलाने वाले विश्वास का मार्ग खोल सकते हैं, जो हमें सौंपा गया है। कुरनेलियुस के घराने में अन्यजातियों में अपना पहला प्रवचन देते हुए पतरस ने उन्हें यीशु की पृथ्वी की सेवकाई के बारे में बताया था कि ''परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; *वह भलाई करता* और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था'' (प्रेरितों 10:38)। इस दिन तक पतरस को भी समझ नहीं थी कि ''सब'' केवल यहूदियों को ही नहीं, सब को उद्धार का संदेश बताया जाना आवश्यक था (प्रेरितों 10:34, 35)।

''सब'' के लिए लगाव को दिखाने के दौरान हमें अपने साथी मसीहियों में यानी **विशेष करके विश्वासी भाइयों में** विशेष दिलचस्पी लेनी चाहिए। आत्मिक परिवार की अवधारणा यीशु की बात में ''क्योंकि जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले वही मेरा भाई, और बहिन, और माता है'' (मरकुस 3:35) मिलती है। गलातियों के नाम पत्र में पौलुस ने पहले यह स्पष्ट किया था कि अलग अलग लोग जिसमें यहूदी और अन्यजाति, दास और स्वन्त्र, नर और नारी हैं, सुसमाचार की आज्ञा मानने के द्वारा परमेश्वर के परिवार में आए थे। उन्होंने मसीह में अपना विश्वास रखा था और उन्हें उनके पापों की क्षमा के लिए उस में डुबकी दी गई थी (गलातियों 3:26-28)। हर किसी को आत्मा का दान और पिता के वारिस होने का खिताब मिला था (4:6, 7)।

''भाइयों'' के लिए यूनानी शब्द (*oikeios*) का अक्षरश: अनुवाद ''घर के लोग'' है। यह उन लोगों का भी संकेत देता है जो रिश्तेदारी या अन्य परिस्थितियों से जुड़े हुए हैं।[14] इस शब्द का सामान्य उपयोग 1 तीमुथियुस 5:8 में मिलता है जो ''अपने घराने'' की आवयश्कताएं पूरा करने को कहता है। प्रतीकात्मक उपयोग इफिसियों 2:19 के साथ गलातियों 6:10 में भी मिलता है। गलातियों में पौलुस ने इस तथ्य की सराहना की कि अन्यजाति लोग ''परमेश्वर का घराना'' बनने के लिए इकट्ठा हुए थे। यहां परमेश्वर के आत्मिक परिवार के लोगों को ''विश्वास'' के द्वारा एक होने वाले लोग बताया गया है। जैसा कि ''विश्वासियों के परिवार'' (NIV) के अनुवाद में मिलता है, यह अभिव्यक्ति मसीह में मसीही लोगों के सामान्य भरोसे का संकेत हो सकती है। एक और सम्भावना है कि ''विश्वास'' विश्वास के उस साझा सिस्टम को कहा गया है-''उस विश्वास के लिए ... जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3)। जैसे भी हो यह बात कलीसिया की ही है (1 तीमुथियुस 3:15; 1 पतरस 4:17)।

अंतिम टिप्पणियां (6:11-18)

''मेरा पत्र महत्वपूर्ण है!'' (6:11)

[11]देखो, मैं ने कैसे बड़े बड़े अक्षरों में तुम को अपने हाथ से लिखा है।

पत्र के अंत के निकट प्रेरित ने जो वह लिख रहा था उस पर यानी उस पर नहीं जो लिखा गया था बल्कि पत्र पर विशेष ध्यान दिलवाया।

आयत 11. मैं ने ... लिखा है वाक्यांश यूनानी धर्मशास्त्र में एक ही क्रिया शब्द (*egrapsa*) से लिया गया है,[15] जिसका अनुवाद NASB ''मैं लिख रहा हूं'' हुआ है। यूनानियों में पत्र (या पत्री) के अंत में यह ''पत्र का अनिर्दिष्टकाल'' लिखने की परम्परा थी। भूतकाल के रूप का इस्तेमाल करके लेखक पत्र पाने वाले को जिसने पत्र को पढ़ना होता था ध्यान में रखते हुए, समय में अपने आपको आगे दिखाता था। पाठक को इस बात की अच्छी तरह से समझ होती थी और वह लेखक के पत्र को लिखने की कल्पना करते हुए अपने विचारों को समय में पीछे को ले जाता था। यदि लेखक कोई पुराना मित्र होता तो पाठक को उसके बारे में इस प्रकार से सोचने में तसल्ली मिल जाती। तौभी पत्र का अनिर्दिष्टकाल सम्बोधित करने का एक परम्परागत तरीका था क्योंकि इसमें लिखने वालों के बीच मोह न होने पर कोई आज्ञा या भाव नहीं होता था।[16]

इस पत्र के अंत में पौलुस ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि उसने **बड़े बड़े अक्षरों में अपने हाथ से लिखा** था। अपने पत्रों को किसी लिपिकार या पेशेवर लेखक से जो कागज पर उसके शब्दों को लिखता, लिखवाने की पौलुस की आदत थी। एक ऐसे व्यक्ति ने अपना परिचय रोमियों के नाम पत्र के अंत के निकट लेखक के रूप में दिया: ''मैं तिरतियुस जिसने यह पत्र लिखा है,[17] प्रभु में तुम्हें सलाम कहता हूं'' (रोमियों 16:22; NIV)। प्रेरित पत्र लिखने के लिए चाहे लिपिकों का इस्तेमाल करता था परन्तु अंतिम टिप्पणियां वह अपने ही हाथ से लिखता होगा। लेखने वाले की छोटी और साफ़ साफ़ लिखाई की तुलना में उसके अक्षर बड़े बड़े और बेडौल होते होंगे।[18] *बैक्ग्राउंड्स ऑफ़ अरली क्रिश्चयनिटी* में एवरेट फग्र्यूसन ने 24 अगस्त, 66 ई. के पैपिरस के पत्र से इस परम्परा के उदाहरण को दिखाया है। पत्र के मुख्य भाग में लिपिक की लिखाई स्पष्ट और एक सी है जबकि लेखक की अंत में जोड़ी गई प्रवाही लिखाई अनियमित और बीच-बीच में खुली है। पौलुस के अन्य पत्रों के साथ गलातियों की पुस्तक भी इसी उदाहरण जैसी दिखती होगी।[19]

लिपिक का इस्तेमाल करने और अपने हाथ से अंत लिखने की बात पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के आरम्भ में स्थापित हो गई थी। यदि गलातियों की पुस्तक 48-49 ई. के लगभग लिखी गई तो यह नये नियम में सम्भाले गए पौलुस के सबसे पुराने पत्रों में से है। इसलिए अंत में अपने हाथ से लिखने की उसकी बात इस पत्र को सबसे पुराना पत्र बनाती है। यह आवश्यक था कि प्रेरित की चिट्ठी को उसी की लिखी माना जाए (देखें 2 थिस्सलुनियां 2:1, 2)। थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस ने लिखा, ''मैं पौलुस अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूं। हर पत्री में मेरा यही चिह्न है; मैं इसी प्रकार से लिखता हूं'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:17)।[20] ''यही चिह्न'' (*sēmeion*, ''हस्ताक्षर'') पहचान की बात होती थी। क्योंकि हमारे पास मूल

दस्तावेज (''हस्ताक्षर'') नहीं हैं, इसलिए यह चाहे स्पष्ट न हो परन्तु हर पत्र में अंतिम टिप्पणियां वह हाथ से ही लिखता था। अपनी कुछ अन्य पत्रियों में पौलुस ने इस व्यवहार को समझाया भी।[21] इस तथ्य का कि शेष पत्रों में उसने स्पष्ट रूप से नहीं कहा ''अर्थ यह नहीं है कि उसने नहीं किया बल्कि केवल यह है कि उसने इस पर ज़ोर नहीं दिया।''[22]

''न खतना और न खतना रहित कुछ है!'' (6:12-16)

[12]जो लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के लिये दबाव डालते हैं, केवल इसलिये कि वे मसीह के क्रूस के कारण सताए न जाएं। [13]क्योंकि खतना करानेवाले स्वयं तो व्यवस्था पर नहीं चलते, पर तुम्हारा खतना इसलिये कराना चाहते हैं कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें। [14]पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। [15]क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। [16]जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शान्ति और दया होती रहे।

आयत 12. अपने पत्र की समाप्ती से पहले पौलुस ने अपना ध्यान यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के खतरे की ओर मोड़ा: **जो लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के लिये दबाव डालते हैं।** वह यहूदी मसीहियों की यानी उन यहूदियों की बात कर रहा था, जिन्होंने यीशु को मसीहा के रूप में ग्रहण तो किया था, परन्तु अभी भी अन्यजाति मसीहियों के लिए खतने पर ज़ोर दे रहे थे।

यूनानी-रोमी संसार में आदर बनाम अपमान पर बड़ा ज़ोर दिया जाता था। यहूदी मत की शिक्षा देने वाले अपमानित होने के बजाय ''शरीरिक दिखावा'' (*euprosōpeō*) चाहते थे। नये नियम में यह शब्द केवल यहीं पर मिलता है और यूनानी साहित्य में तो बहुत कम मिलता है।[23] यह ''अच्छा'' (*eu*) और ''चेहरा'' (*prosōpon*) शब्दों का मेल है जिसमें इस शब्द में बाहरी दिखावे पर ज़ोर है। ''शारीरिक'' (*sarx*) शब्द यहां पर शब्दशः इस्तेमाल किया गया प्रतीत होता है क्योंकि इसके बाद ''खतना'' शब्द है। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों का ''शारीरिक दिखावा'' अन्यजाति मसीहियों के खतने से सम्बन्धित था। ''दबाव डालने'' (*anankazō*) का क्रिया शब्द 2:3 और 2:14 से दोहराया गया है; ये आयतें भी उसी ज़िद्द से सम्बन्धित हैं कि अन्यजाति लोग खतने को तथा अन्य यहूदी रीतियों को मान लें।

इस खतने का उन यहूदियों को क्या मिलना था जो यीशु को मसीहा मानकर उस पर विश्वास ला चुके थे? वे इतनी दृढ़ता से इस छोटे से ऑपरेशन पर क्यों ज़ोर देते होंगे कि यदि वे इसे नहीं मानते तो अपने अन्यजाति भाइयों के साथ सामान्य भोजन नहीं करेंगे (देखें 2:11-21)? आखिर इन अन्यजातियों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया था और उन्हें वही ''पवित्र आत्मा का दान'' मिला था जो उन यहूदियों को दिया गया था जिन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के प्रवचन को मानकर उसकी आज्ञा मानी थी।[24]

इन प्रश्नों का उत्तर आम तौर पर अगली पंक्ति में दिया गया है: **केवल इसलिये कि वे**

मसीह के क्रूस के कारण सताए न जाएं। परन्तु इस व्याख्या में उन लोगों की पहचान नहीं बताई गई है जो यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के लिए खतरा थे। बहुत सम्भावना यह है कि ये वही यहूदी थे जो यह नहीं मानते थे कि यीशु मसीहा है। ऐसे लोगों ने पौलुस की जान को केवल यरूशलेम में ही नहीं बल्कि गलातिया के प्रांत में भी धमकी दी थी (प्रेरितों 9:28-30; 13:44-52; 14:1-7, 19, 20)। वे पौलुस के इस संदेश को नकारते थे कि अन्यजाति *बिना* खतने के मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर को स्वीकार्य हो सकते हैं (5:11 पर टिप्पणियां देखें)।

यहां पर खतरा यरूशलेम के उन उत्साही यहूदियों से हो सकता है जो यीशु में विश्वास नहीं रखते थे। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों ने यह तर्क दिया हो सकता है कि यदि वे गलातिया में अन्यजाति मसीहियों को खतने के लिए मना सकें तो इससे यरूशलेम की कलीसिया और यहूदिया में अन्य यहूदी मण्डलियां खतनारहित अन्यजातियों के साथ एक संगति के लिए अविश्वासी यहूदियों के प्रभाव से बच सकते हैं।[25] यहूदी मत की शिक्षा देने वाले यरूशलेम के अधिकारियों को यह बता सकते थे कि वे वास्तव में लोगों को यहूदी मत में ला रहे हैं। इस प्रकार से उन्होंने "मसीह के क्रूस" के प्रभाव को कम करने की कोशिश की।

एक और सम्भावना यह है कि पहले वालों से चाहे खास तौर पर अलग नहीं है परन्तु सम्भावित सताने वाले अविश्वासी यहूदी थे जो गलातिया के प्रांत में रहते थे। यहूदी मत की शिक्षा देने वाले आराधनालय और कलीसिया दोनों के साथ अपनी संगति को बनाए रखना चाह रहे हो सकते हैं। यदि वे अपने अन्यजाति भाइयों को खतने के लिए मना लेते तो उनके साथ उनकी संगति (मूल में "मसीह के क्रूस" के द्वारा स्थापित हुई) अविश्वासी यहूदियों के लिए स्वीकार्य होनी थी। इस प्रकार से यहूदी मत की शिक्षा देने वाले यहूदी मत में अपनी समृद्ध विरासत और मसीह में मिले अपने नये विश्वास के दोनों संसारों के लाभ लेते रह सकते थे।

आयत 13. पौलुस ने यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की स्थिति के व्यर्थ होने को दिखाया जब उसने बताया कि **खतना करानेवाले स्वयं तो व्यवस्था पर नहीं चलते।** लोगों के रूप में इस्राएली जिस वाचा को मानने के लिए लाचार थे वह सीनै पर दी गई पूर्ण आज्ञापालन की मांग करने वाली वाचा थी (निर्गमन 19:5-8; देखें गलातियों 5:3), जबकि उन्होंने पूरी तरह से इसे कभी नहीं माना था। यही बात पहली सदी के यहूदी मसीहियों की थी कि उन्होंने भी व्यवस्था को कभी नहीं माना था।

यहूदी मत की शिक्षा देने वाले खतने पर इतना ज़ोर इसलिए नहीं दे रहे थे कि वे अन्यजातियों से व्यवस्था को पूरी तरह से मनवाना चाहते थे बल्कि वचन कहता है कि वे ऐसा इसलिए कर रहे थे **ताकि शारीरिक दशा पर घमण्ड करें** (6:12 टिप्पणियां देखें)। यह शारीरिक मानक आत्मा की सोच के उलट था। यहूदी मत की शिक्षा देने वाले लोक गलातिया की कलीसियाओं को बड़ी हानि पहुंचा रहे थे क्योंकि वे अपने पुरखाओं की परम्पराओं को सुरक्षित रखने की इच्छा से क्रूस पर बहे लहू के द्वारा छुड़ाए गए अन्यजातियों पर उस कीमती छुटकारे से वंचित करने के लिए दबाव डाल रहे थे। अन्यजाति मसीहियों के लिए खतना करवाने का अर्थ प्रभु के उपकार और उस उद्धार को जिसे उसने क्रूस पर खरीदा था, छोड़ देना! पौलुस ने उन्हें पहले चेतावनी दी थी, "यदि खतना कराओगे तो मसीह में तुम्हें कुछ लाभ न होगा" (5:2)। हो सकता है कि यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को अपने कार्यों के पूरे असर की समझ न हो परन्तु उसका

व्यवहार संसारिक और स्वार्थी था जैसा कि ''तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड करें'' वाक्यांश संकेत मिलता है।

आयत 14. उन यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के उलट, जो शरीर में घमण्ड करते थे, पौलुस ने दावा किया, **पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का।** इस कथन की विडम्बना यह है कि यूनानी-रोमी संसार में क्रूसों और क्रूसारोहण की बात सभ्य संगति में नहीं की जाती थी। क्रूस अपमान, क्लेश, और मृत्यु का प्रतीक जबकि क्रूसारोहण गुलामों और खूंखार अपराधियों के लिए ही होता था। सिसेरों ने एक बार टिप्पणी की थी कि '' 'क्रूस' शब्द को ही रोमी विचारों, उसकी आंखों और उसके कानों से [भी] निकल जाना चाहिए।''[26] यीशु का क्रूस चाहे यहूदियों के लिए ''ठोकर'' और अन्यजातियों के लिए ''मूर्खता'' की बात थी पर पौलुस के घमण्ड के योग्य केवल यही था। उसके लिए यह ''परमेश्वर की सामर्थ और परमेश्वर का ज्ञान'' था (1 कुरिन्थियों 1:23, 24)।

इस पत्री में क्रूस के सम्बन्ध में पौलुस के अंतिम शब्द चौंकाने वाले हैं: **जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया** (2:20 पर टिप्पणियां देखें)। इन शब्दों का इस्तेमाल प्रेरित की मृत्यु के साथ साथ उसके सम्पूर्ण जीवन की शिक्षा के लिए किया जा सकता था। यूनानी धर्मशास्त्र में अनुवादित शब्द ''जिसके द्वारा'' (*di'hou*) है। सम्बन्धबोधक सर्वनाम ''जिसके'' (*hou*) का अनुवाद ''जो'' भी हो सकता है। ऐसा होने पर पूर्वपद ''मसीह'' होगा। इस समझ का समर्थन NJB से होता है: ''... हमारी प्रभु यीशु, जिसके द्वारा संसार मेरे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया है।'' जे. बी. लाइटफुट ने लिखा है कि यह सर्वनाम ''क्रूस'' का इशारा करता है। उसने पौलुस के यह कहते हुए कल्पना की, '' 'मसीह का क्रूस मेरे क्रूस पर चढ़ाए जाने का माध्यम है जैसे उसी का हो; क्योंकि मैं उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया' [2:20]।'' लाइटफुट ने यह भी लिखा है कि यदि सम्बन्धबोधक सर्वनाम मसीह के लिए होगा तो अलग यूनानी संरचना की उम्मीद की जाती थी, जैसे *en hō* (''जिसमें'') या *sun hō* (''जिसके साथ'')।[27]

आयत 15. यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की अपनी चर्चा को समाप्त करते हुए पौलुस ने लिखा **क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि।** कुछ लोगों को यह बात फालतू लग सकती है। परन्तु एक ही शब्द ''खतना'' वह चिड़ाने वाला शब्द था जिससे गलातिया की कलीसियाओं में इतनी परेशानी हुई। इसने चेलों को बांट दिया और अंत में वहां भाइचारे के प्रेम को खत्म कर दिया। इसलिए प्रेरित का मानना था कि एक अंतिम बार इसका उल्लेख करना आवश्यक है। पत्र में पहले उसने लिखा था:

> देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तु? हें कुछ लाभ न होगा। फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूं कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी। तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो। क्योंकि आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं। मसीह यीशु में न खतना और न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है (5:2-6)।

खतना अपने आप में बुरा नहीं था। पौलुस ने खुद भी जवान तीमुथियुस का खतना उसके परिवार की स्थिति के कारण किया था जिसमें उसकी माता यहूदिन थी जबकि उसका पिता यूनानी था (प्रेरितों 16:1-3)। अन्य मामलों की तरह पौलुस तीमुथियुस को अपनी मिशनरी टीम में ले रहा था इस कारण वह केवल ''सब मनुष्यों के लिए सब कुछ'' बन रहा था ताकि ''किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार'' करवा सके (1 कुरिन्थियों 9:19-22)। वह किसी को भी जो चाहे यहूदी हो या अन्यजाति, ठोकर देने से बचना चाहता था।[28]

हमारे पास कोई इतिहास नहीं है जो बताता हो कि पौलुस ने किसी यहूदी को खतना करवाने से रोका हो। परन्तु उसने अन्यजातियों को बताया था कि यदि वे ''व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते'' थे (5:4) तो मसीह से उन्हें ''कुछ लाभ न'' होना था (5:2), उन्हें ''सारी व्यवस्था माननी'' पड़नी थी (5:3), उन्हें ''मसीह से अलग'' कर दिया जाना था और उन्होंने ''अनुग्रह से गिर गए'' होना था (5:4)।

पौलुस का संदेश सुस्पष्ट है। दो वाचाओं के अधीन रहना असम्भव है, खासकर ऐसी दो वाचाओं के अधीन जो परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहरने की परिभाषा बिल्कुल अलग करती हैं। शारीरिक खतना पहली वाचा का चिह्न था, जो कि व्यवस्था की वह वाचा थी जिसे कोई भी मनुष्य पूरा नहीं कर पाया। असल में यह वह व्यवस्था थी जो सब मनुष्यों को दोषी ठहराने के लिए दी गई थी। नई वाचा विश्वास (*pistis*) के द्वारा अनुग्रह की वाचा है जिसका आधार अंत में मसीह की वफ़ादारी है। पौलुस ने दृढ़ता से कहा, ''मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया कि परमेश्वर के लिए जीऊं। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया'' (2:19, 20)।

गलातियों 5 और 6 में पौलुस का अत्याधिक ज़ोर आत्मा के वास वाले जीवन यानी ''नई सृष्टि'' के रूप में मसीही पर है। किसी में ज़बर्दस्त बदलाव आ जाता है जब वह अपने पुराने, ठहराए हुए, अपने ही ऊपर थोपे गए प्रभुत्व को छोड़कर यीशु मसीह के प्रभु होने को मानकर विनम्रता से घुटने टेक (वास्तव में मन को झुका) लेता है (देखें फिलिप्पियों 2:9-11)। पश्चात्तापी विश्वासी मसीह में एक नया व्यक्ति बन जाता है और आत्मिक रूप में उसका खतना हो जाता है जब वह ''जल और आत्मा से'' नया जन्म ले लेता है (यूहन्ना 3:5)।[29] पौलुस ने कुलुस्से के लोगों को लिखा कि उन्होंने ''मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया'' था। उनका ''ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है।'' उनके मन का खतना तब हुआ था जब वे ''उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए'' थे (कुलुस्सियों 2:6, 11-13)। इसके अलावा पौलुस ने रोम के मसीहियों को बताया कि जब उन्होंने ''मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया'' और ''उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया'' तो वे ''नये जीवन की सी चाल'' चलने के लिए जी भी उठे थे (रोमियों 6:3, 4)। उसने लिखा ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं'' (2 कुरिन्थियों 5:17)।

हम में से जो लोग इस प्रक्रिया से गुज़र चुके हैं वे ''परमेश्वर के [नये] इस्राएल'' अर्थात

कलीसिया का भाग बन गए हैं (6:16)। हम अन्त में उस स्वर्गीय महिमायुक्त राज्य में प्रवेश करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा में आनन्द कर सकते हैं जिसके विषय में पतरस ने लिखा है: ''पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी'' (2 पतरस 3:13)।

आयत 16. जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर **शांति और दया** की पौलुस की आशीष कोई बेहूदा, बेतुका, बाद में आया विचार नहीं है। इसके बजाय ''शांति और दया'' का हवाला जान बूझकर आरम्भिक अभिवादन का अक्स देने के लिए वहां इस्तेमाल किया गया जहां प्रेरित गलातिया के अपने पाठकों पर ''अनुग्रह और शांति'' देना चाहता था (1:3)।

जब पौलुस ने ''जितने इस नियम पर चलेंगे'' उनकी बात की तो वह सब में नियम को मानने वालों की बात नहीं कर रहा था बल्कि यह बात कर रहा था कि मसीही लोगों का जीवन कैसा होना चाहिए। नये नियम में ''चलना'' के लिए यूनानी शब्द (*stoicheō*) किसी के जीने के ढंग या आचरण के लिए इस्तेमाल हुआ है। असल में पौलुस ने इसका इस्तेमाल पिछले अध्याय में इसी प्रकार किया: ''यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी'' (5:25)। इसका समानार्थी (*peripateō*) पिछले अध्याय में मिलता है: ''पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो [*peripateō*] तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे'' (5:16)।

''नियम'' शब्द से पौलुस का क्या अभिप्राय था? ''नियम'' के लिए यूनानी शब्द (*kanōn*) मूल में ''नापने वाली छड़ी'' को दर्शाता था, परन्तु फिर इसके इस्तेमाल ने ''आचरण के नियम'' या ''न्याय का मानक'' के संकेत भी दिए।[30] वह ''नियम'' या ''मानक'' क्या था जिसके द्वारा पौलुस चाहता था कि गलातियों का जीवन हो? कइयों का मानना है कि ''इस नियम'' पिछली आयत वाली बात को कहा गया है: ''क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि'' (6:15)। और लोग निकटतम संदर्भ से अतिरिक्त विवरणों को जोड़ेंगे। इसलिए ''इस नियम'' को इस प्रकार से संक्षिप्त किया जा सकता है कि इस पर यीशु के बलिदान में भरोसा करना आवश्यक है जो नई सृष्टि को सम्भव बनाता है और यह समझना कि उद्धार के सम्बन्ध में शारीरिक खतना बेमतलब है (6:12-15)। इस मानक को मानने वाले लोग ''आत्मा के चलाए चलते हैं'' और ''व्यवस्था के अधीन न रहे'' (5:18)।

पौलुस के मन में कौन लोग थे जब उसने **परमेश्वर के इस्राएल पर** आशीष की पेशकश की? कुछ टीकाकारों का उत्तर इस प्रश्न के लिए स्पष्ट नहीं है। उनका गलत अंदाजा इस तथ्य के कारण है कि प्रेरित ने अपनी आशिषें देते हुए संयोजक शब्द (*kai*) जिसका अनुवाद आम तौर पर ''और'' किया जाता है दो विवरणों को के साथ मिला दिया। NASB में इसे इस प्रकार लिखा गया है, ''जो इस नियम के अनुसार चलेंगे, उन पर शांति और दया, *और* परमेश्वर के इस्राएल पर।''[31] वचन को इस प्रकार से समझने पर बहुतों को लगता है कि पौलुस एक नहीं बल्कि दो अलग अलग समूहों की बात कर रहा था।

परन्तु संयोजक शब्द *kai* केवल मिलाने वाले होने के अलावा कई प्रकार से कार्य कर सकता है। यहां पर हमारा वासता उससे है जिससे व्याकरण को जानने वाले लोग ''व्याख्यात्मक *kai*'' या ''अर्थप्रकाशक *kai*'' कहते हैं। इसका अर्थ केवल इतना है कि ''कहने का अर्थ है''

ताकि संयोजक के बाद आने वाला शब्द या वाक्य अपने से पहले के शब्द की व्याख्या करता हो।[32] NIV1984 में अनुवादकों ने 6:16 का अनुवाद इस प्रकार करके अच्छा किया, ''शांति और दया उन सब पर हो जो इस नियम को मानते हैं, बल्कि परमेश्वर के इस्राएल पर।''[33] *Kai* के इस इस्तेमाल का अर्थ समझ आ जाने पर यह स्पष्ट कर देता है कि पौलुस कलीसिया की यानी परमेश्वर के आत्मिक इस्राएल की बात कर रहा था। ''परमेश्वर के इस्राएल'' में जल और आत्मा से जन्म पाए हुए सब लोग आ जाते हैं, वे चाहे यहूदी हों या यूनानी, दास हों या स्वन्त्र, नर हों या नारी। ये लोग ''मसीह के'' और ''अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस'' हैं (3:26-29)।

Kai की व्याख्या ''और'' के रूप में करने की चर्चा के बाद आर. एलन कोल ने तर्क दिया कि ''परमेश्वर के इस्राएल'' को कलीसिया के रूप में समझा जाना चाहिए। उसने कहा कि यदि *kai* का अनुवाद ''बल्कि'' के बजाय ''और'' होता है तो पौलुस परमेश्वर के राज्य में साथ साथ रह रहे दो अलग अलग समूहों की बात मान रहा था यानी वे जो ''इस नियम पर चलते हैं'' (6:15 में दिया गया नियम) और वह जो नहीं चलते (पुराने नियम वाला ''इस्राएल'')। ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि जो लोग 6:15 वाले नियम को मानने से इनकार करते हैं वे अपने आपको आत्मिक इस्राएल से यानी उसकी ''शांति और दया'' के लाभों से वंचित कर लेते हैं। कोल ने आगे समझाया कि अन्यजाति मसीहियों के बाद बेशक परमेश्वर के राज्य में यहूदी मसीहियों की जगह थी पर अविश्वासियों के लिए (चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति) कोई जगह नहीं थी। इसके अलावा यहूदी मत की शिक्षा देने वालों ने अपने आपको आत्मिक इस्राएल से निकाल लिया था क्योंकि वे 6:15 में ठहराए नियम को नहीं मानते थे (देखें फिलिप्पियों 3:2, 3)।[34]

यह व्याख्या कि ''परमेश्वर का इस्राएल'' कलीसिया के समान ही है कम से कम दूसरी सदी ई. पुरानी है। एक अविश्वासी यहूदी के साथ अपनी बातचीत में जस्टिन मार्टिर ने लिखा कि ''सच्चे आत्मिक इस्राएल'' में ''हम है जो क्रूस पर दिए मसीह के द्वारा परमेश्वर के पास आए हैं।''[35] चौथी सदी में गलातियों पर टिप्पणी करते हुए जॉन क्रिसोस्टोम ने इसी से मिलाया: ''जो लोग इन बातों को मानते [मसीह में अनुग्रह की नई बातें] वे शांति और मेल जोल का आनन्द पाएंगे, और उन्हें 'इस्राएल' के नाम से पुकारा जाना उपयुक्त है।''[36]

कलीसिया को ''परमेश्वर का इस्राएल'' कहकर पौलुस ने मसीह के द्वारा लोगों की एक नई जाति बनाने की परमेश्वर की मंशा को दिखा दिया।[37] यह अवधारणा यीशु की उस भविष्यवाणी के साथ मेल खाती है जो यहूदी अगुओं के लिए कही गई थी: ''परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा'' (मत्ती 21:43)। पौलुस की तरह ही नये नियम के अन्य लेखकों ने कलीसिया का वर्णन उन्हीं शब्दों में किया जिन शब्दों में पहले इस्राएल का किया जाता था। उदाहरण के लिए, पतरस ने मसीही लोगों को बताया, ''पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और [परमेश्वर की] निज प्रजा हो'' (1 पतरस 2:9क)। यह विवरण निर्गमन 19:5, 6 से लिए गए थे जहां परमेश्वर ने सीनै पहाड़ पर मूसा के द्वारा इस्राएल के साथ पुरानी वाचा बांधी।

पतरस ने अपने पाठकों को यह कहकर सम्बोधित किया ''उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में *तितर-बितर* होकर रहते हैं'' (1 पतरस

1:1)। इसके अलावा याकूब ने अपने यहूदी श्रोताओं को ''उन बारहों गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते हैं नमस्कार पहुंचे'' (याकूब 1:1)। ''तितर-बितर'' का अनुवाद जिस यूनानी शब्द (*diaspora*) से किया गया उसका इस्तेमाल फलस्तीन के बाहर रहने वाले यहूदियों के लिए किया जाता था। नये नियम में यह इसी अर्थ के साथ एक बार ''जो यूनानियों में तितर बितर होकर रहते हैं'' वाक्यांश में मिलता है (यूहन्ना 7:35)।

''मैं मसीह का प्रेरित और सेवक हूं!'' (6:17)

[17]आगे को कोई मुझे दुख न दे, क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं।

आयत 17. आगे को (*tou loipou*) का अनुवाद ''अंत में'' (NIV1984) या ''संक्षेप में'' (GNT) हो सकता है। ऐसे में पौलुस अपने पत्र के अंत का ही संकेत दे रहा था। फिर भी अधिकतर अंग्रेज़ी संस्करणों में इस वाक्यांश का अनुवाद NASB के जैसा ही किया है। यदि ''आगे को'' सही है। तो यह इस बात का संकेत है कि प्रेरित चाहता था कि उसके विरोधी उसके विरुद्ध अपने आक्रमण तुरन्त बंद कर दें।

पौलुस ने कहा, **कोई मुझे दुख न दे।** यह यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की गतिविधि की बात होगी, जिन्होंने प्रेरित के काम को और कठिन और तनाव भरा बना दिया था। उन्होंने उस पर झूठा आरोप लगाया था (देखें 1:10-12), उसके विरुद्ध कपटपूर्ण चाहे चर्लीं थीं (2:4) और अपनी गलत शिक्षा से उन कलीसियाओं को जिन्हें पौलुस ने आरम्भ किया था बिगाड़ा था (देखें 4:11)। वह चाहता था कि उनकी कपटी गतिविधियां बंद हो जाएं।

स्पष्ट परन्तु असामान्य भाषा का इस्तेमाल करते हुए, पौलुस ने बताया कि यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को अपने हानि कारक काम बंद कर देने चाहिए: **क्योंकि मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं।** अपने आपको कोसने के बजाय पौलुस चुने हुए प्रेरित के रूप में यीशु के साथ अपने सम्बन्ध पर ज़ोर दे रहा था। रिचर्ड एम. लौंगनेकर ने बताया है:

> सो वह चेतावनी देता है कि आगे को कोई उसे परेशान न करे क्योंकि वह मसीह का ''अंकित मनुष्य'' है, सकारात्मक रूप में कहें तो वे दाग इस बात को दर्शाते हैं कि वह मसीह के स्वामित्व और सुरक्षा के अधीन है, और नकारात्मक रूप में, जो लोग उसे सताने की कोशिश करते हैं, वे मसीह के न्याय और प्रतिशोध का सामना करेंगे।[38]

एक अर्थ में ''यीशु के दाग'' वाक्यांश मसीह के ''दास'' (*doulos*) या ''गुलाम'' के रूप में पौलुस की पहचान का संकेत देने के लिए लाक्षणिक रूप से काम करता है (रोमियों 1:1)। प्राचीन जगत में गुलाम के लिए अपने हाथ या माथे पर अपने स्वामी का चिह्न अंकित करवाना आम बात थी।[39] परन्तु एक और अर्थ में यह भाषा बिल्कुल शाब्दिक है क्योंकि पौलुस मसीह के लिए अपनी सेवा करते हुए गम्भीर रूप में घायल किया गया। यीशु ने उसे निजी तौर पर गुलाम का ठप्पा नहीं लगाया था, फिर भी उसकी देह पर लगे दाग उनके मालिक-गुलाम सम्बन्ध की पुष्टि करते हैं। सताव को सहते हुए पौलुस ने कई अवसरों पर मसीह के दुखों में साझी हआ

था (2 कुरिन्थियों 4:10; 6:4, 5; 11:23-28)। यदि गलातियों की पत्री पहली मिशनरी यात्रा के तुरन्त बाद लिखी गई (देखें गलातियों 1:6) तो पौलुस के ध्यान में लुस्त्रा में पथराव से मिलने वाले घाव और दाग हो सकते हैं। बरनबास और वह गलातिया के प्रांत में से होते हुए वापस गए, इसलिए भाइयों ने उसके दुख के प्रमाण को देखा होगा (प्रेरितों 14:19-28)।

''दाग'' यूनानी शब्द (*stigma*) से लिया गया है जो अंग्रेज़ी भाषा में इसी प्रकार मिलता है। अंग्रेज़ी शब्द *''stigma''* की परिभाषा ''गर्म लोहे से पड़े दाग,'' ''ब्रांड,'' ''अपमान या बदनामी का चिह्न,'' ''पहचानी जाने वाली बीमारी,'' और ''बीमारी के विशेष लक्षण का चिह्न'' के रूप में परिभाषित किया गया है। स्टिगमा में विशेषकर अपमान के संकेत मिलते हैं चाहे वे जातीयता पर आधारित हों, सामाजिक अवस्था पर, बीमारी पर या किसी के पुराने कार्यों या सम्बन्धों पर। दागों का पौलुस का दृष्टिकोण अलग था जो उसे यीशु के साथ जोड़ता था। औरों ने चाहे उन से इनकार कर दिया हो पर उसने इन चिह्नों को मसीह के गुलाम के रूप में अपनी वफ़ादार सेवा की गवाही के रूप में देखा।

पौलुस के *stigma* (स्टिगमा) यानी दाग में दिखाई देने वाली चोटें, कोड़ों के निशान और घाव थे जो उसके शरीर पर पड़े थे और यह पुष्टि करते थे कि उसने मसीह के विश्वासयोग्य सेवक के रूप में दुख सहा था (मत्ती 5:10, 11; देखें यशायाह 53:3-5)। पौलुस उस ''दाग'' से जो उसे इस स्वामी के गुलाम के रूप में पहचान दिलाता था शर्मशार नहीं था। बल्कि ये दाग उसकी पहचान थे क्योंकि उसने हर चीज़ की हानि उठाई थी और उन्हें ''कूड़ा'' माना था ताकि वह ''मसीह को प्राप्त'' कर ले और उस में ''पाया'' जाए। ''अपनी उस धार्मिकता'' के बजाय ''जो व्यवस्था से है'' उसने धार्मिकता को चुना था ''जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है। वह चाहता था कि मसीह को पूरी तरह से ''जानूं'' और ''उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने तक के पद तक पहुंचूं'' (फिलिप्पियों 3:7-10)।

''हे भाइयो प्रभु का अनुग्रह तुम्हारे साथ हो!'' (6:18)

[18]हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमीन।

आयत 18. अपने पत्र को पौलुस ने यह लिखते हुए खत्म किया, हे **भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे। आमीन।** 6:16 वाले ''शांति'' के हवाले की तरह ये शब्द हमें 1:3 में इन भाइयों को पौलुस के आरम्भिक अभिवादन की ओर फिर से वापस जाने को कहते हैं: ''परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु *यीशु मसीह* की ओर से तुम्हें *अनुग्रह* और शान्ति मिलती रहे।'' ''आत्मा'' शब्द स्पष्ट रूप में गलातिया की इन कलीसियाओं के सभी सदस्यों को सम्बोधित करने के लिए इस्तेमाल किया गया सामूहिक एक वचन है। प्रेरित ने यह उम्मीद करते हुए कि वे उसकी शिक्षाओं को मानेंगे, सकारात्मक नोट के साथ अपने पत्र को समाप्त किया। उसने मसीह के अनुग्रह पर ज़ोर दिया, जिसमें उन्हें भरोसा रखने की आवश्यकता थी और उन्हें ''हमारे प्रभु'' कहकर यकीन दिलाया और उन्हें ''भाइयो'' कहकर सम्बोधित किया। पत्र का अंत उसने ''आमीन'' कहते हुए किया।

प्रासंगिकता

भाइयों को सम्भालने की प्रथा (6:1)

6:1 में पौलुस ने उस ढंग पर फोकस किया जिस में मसीही व्यक्ति को किसी भाई को, जो पाप में गिर गया हो, सम्भालने के परमेश्वर का काम को करने के लिए जाना चाहिए। पाप चाहे जो भी हो, सुधारने वाले का व्यवहार यीशु के जैसा होना चाहिए, जो खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया। जहां प्रेम है वहां दण्ड देने की या पाप से घायल भाई को निकालने की इच्छा नहीं हो सकती। इसके विपरीत एक प्रेमी मसीही को ''ऐसे को नम्रता को साथ सम्भालने'' के उत्साह से प्रेरणा मिलेगी।[40]

किसी ऐसे भाई को जिसने पाप किया है, सुधारने की कोशिश करने वाले मसीही व्यक्ति के लिए कैसी कैसी परीक्षाएं खतरा बन सकती हैं ? पौलुस ने यह नहीं बताया, परन्तु हम ऐसी नाजुक स्थिति में कई खतरों के बारे में सोच सकते हैं। कई सम्भावनाओं में से निम्नलिखित से बचा जाना आवश्यक है:

आत्मिक और प्रार्थनापूर्वक तैयारी न कर पाना।

सम्भालने वाले के उद्देश्य पर धब्बा लगाने के लिए पापी के साथ सहानुभूतिपूर्वक निजी सम्बन्धों को आड़े आने देना। गलती करने वाले भाई को तसल्ली देने वाले भाई को उस हानि को देख पाना आवश्यक है जो उसके पाप से कलीसिया को और प्रभु के पवित्र नाम को हो रही है।

उत्साहपूर्वक जोश या नाराजगी दिखाना जिसे असहिष्णुता या क्रोध बताया जा सके। ऐसा प्रदर्शन पापी के मन को कठोर करके उसे विरोधी और विद्रोही बनने के लिए उकसा सकता है।

सुधारने वाले की ओर से किसी भी प्रकार के घमण्डी या अपने आप में सही होने का दिखावा।

यह भूल जाना कि शामिल सभी पक्ष पापियों की संगति हैं जो सब परमेश्वर के अनुग्रह और दया पर निर्भर हैं।

इनमें से किसी भी बात में नाकामी कलीसिया में अड़ियल भाई तक पहुंचने तक किसी भी प्रयास में रुकावट होगी। यह एक ऐसा कार्य है जिसे सब को बड़ी ही विनम्रता से करना चाहिए। गलत तरीका किस को वफ़ादारी से मसीही सेवा और संगति में वापस लाने के किसी आत्मा को जीतने के लिए अवसर को नष्ट कर सकता है।

इन सुझावों का इस्तेमाल न केवल पाप में फसे किसी सदस्य के आरम्भ में सम्पर्क करने के समय बल्कि बाद में भी चेतावनियां और शिक्षाएं देने के सम्बन्ध में किया जाना चाहिए। स्नेही मन होना आवश्यक है। किसी भटके हुए मसीही के पास परमेश्वर और कलीसिया की चिंता को लेकर जाना आवश्यक है, जिसमें पापी के उद्धार की इच्छा सच्चे मन से की जाए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम चाहे कितने भी प्रेमपूर्वक या धीरज से प्रयास करें, परन्तु उसे मानना या न मानना अंत में पापी के मन की बात है।

संगति से निकाल देना (6:1)

जब कलीसिया किसी भाई या बहन को जिसने पाप किया हो, बहाल करने का प्रयास करती है तो कई बार वह व्यक्ति मन फिराने से इनकार कर सकता है। ऐसी स्थिति में उस मसीही को झुण्ड में वापस लाने के बार बार प्रयास किए जाने आवश्यक हैं। यदि वह पहली ताड़ना को नहीं मानता या मानती तो उस अड़ियल सदस्य के पास दूसरे मसीहियों को जाकर प्रेमपूर्वक बात करनी चाहिए (देखें मत्ती 18:15-17; याकूब 5:19, 20)। यदि सारे प्रयास काम न आएं तो कलीसिया का अनुशासन लागू किया जाए। यह आज्ञा कलीसिया पर आज भी लागू होती है। यह एक ऐसी जिम्मेदारी है जो न केवल कलीसिया के अगुओं पर है बल्कि पूरी मण्डली पर भी है।[41] जब सदस्य इस कार्य के समर्थन के लिए तैयार न हों तो इसके उद्देश्य को धक्का लगेगा।

ऐसे किसी भी सदस्य से जो पाप में जीवन बिता रहा है जो न केवल उसके लिए बल्कि पूरी कलीसिया की पवित्रता और निष्ठा के लिए खतरा है, संगति छोड़ देना चाहिए। कुरिन्थुस की कलीसिया से पौलुस ने पूछा, ''क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा स खमीर पूरे गूंदे हुए आटे को खमीर कर देता है?'' (1 कुरिन्थियों 5:6ख)। उस वचन में भाई का पाप कलंक लगाने का था। वह अपने पिता की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध रख रहा था यानी ऐसा ''व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता'' (1 कुरिन्थियों 5:1)। अपने रूपक में पौलुस ने उनसे कहा कि ''पुराना खमीर निकाल'' दो ''कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो'' (1 कुरिन्थियों 5:7)। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसके कहने का अर्थ समझ में आ गया है, उसने भाइयों को याद दिलाते हुए साफ़-साफ़ कहा कि उसने पहले निर्देश दिया था कि ''व्यभिचारियों की संगति न करना [*sunanamignumi,* सुनानामिग्नुमि]'' (1 कुरिन्थियों 5:9)। यूनानी शब्द में है कि वे ऐसे व्यक्ति से न ''घुले मिलें'' और न ''व्यवहार करें।''

आज की मण्डलियों के बहुत से सदस्यों ने संगति से इस प्रकार निकाले जाने को कभी नहीं देखा। यदि देखा तो स्थिति लगभग व्यभिचार के कुछ अपमानपूर्ण मामले जैसी ही होगी। परन्तु पौलुस के निर्देश केवल व्यभिचार की बातों तक सीमित नहीं थे। ''व्यभिचारी'' के साथ साथ उसने लोभी, मूर्तिपूजक, गाली देने वाले या अंधेर करने वाले का नाम भी लिया (1 कुरिन्थियों 5:11)। उसने इस आज्ञा के साथ समाप्त किया जिसे आसानी से समझा जा सकता है: ''उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो'' (1 कुरिन्थियों 5:13)।

एक विशेष अध्ययन: ''मसीह की व्यवस्था'' (6:2)

नये नियम में गलातियों 6:2 के बाद, ''मसीह की व्यवस्था'' वाक्यांश केवल एक बार 1 कुरिन्थियों 9:21 में मिलती है। NASB में कुरिन्थियों का अनुवाद इस प्रकार किया गया है, ''जो व्यवस्था के बिना हैं, [मैं बन गया] जैसे व्यवस्था के बिना, *चाहे* परमेश्वर की व्यवस्था के बिना नहीं बल्कि मसीह की व्यवस्था के अधीन, ताकि मैं उन्हें जीत सकूं जो व्यवस्था के बिना हैं।'' NLT में है ''... मैं परमेवर की व्यवस्था की उपेक्षा नहीं करता; मैं मसीह की व्यवस्था की आज्ञा मानता हूं।'' एक यहूदी मसीही के रूप में पौलुस अन्यजातियों के पास मसीह का उद्धार दिलाने वाला संदेश लेकर गया। वह अपने आपको ''परमेश्वर की व्यवस्था के बिना नहीं'' मानता था बल्कि ''मसीह की व्यवस्था'' के अधीन मानता था।[42]

1 कुरिन्थियों 9:21 में ''मसीह की व्यवस्था के अधीन'' (*ennomos Christou*) वाक्यांश का अर्थ कई टीकाकार ''सुसमाचार के अधीन'' समझते हैं। ''मसीह की व्यवस्था'' नये नियम का सम्पूर्ण संदेश है न कि केवल मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने का ''मूल सुसमाचार'' (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। इस व्याख्या के अनुसार इसमें नये नियम में पाई जाने वाली सभी आशिषें, प्रतिज्ञाएं और जिम्मेदारियां और शिक्षाएं आ जाती हैं यानी यीशु द्वारा अपने चेलों को प्रतिज्ञा की हुई सारी ''सच्चाई'' (यूहन्ना 16:12, 13) है। परन्तु यह पक्का नहीं है कि पौलुस ''मसीह की व्यवस्था'' वाक्यांश का इस्तेमाल इसी अर्थ में कर रहा था। अधिक सम्भावना यही है कि उसने ''व्यवस्था'' शब्द को पुरानी वाचा की व्यवस्था से अलग चुना।

इसके अलावा यूनानी वाक्यांश का अनुवाद करने के लिए हो सकता है कि ''अधीन'' उपयुक्त पूर्वसर्ग न हो। *Ennomos* शब्द पूर्वसर्ग *en* (एन, ''में'') और संज्ञा शब्द *nomos* (''व्यवस्था'') को मिलाकर बनता है और इसकी परिभाषा ''व्यवस्था के भीतर रखना,'' ''सीधा,'' ''ठीक,'' और ''व्यवस्था के अधीन'' के रूप में की गई है।[43] *Ennomos* शब्द *anomos* (''कोई व्यवस्था न होना'') का विपरीत शब्द है और इसका अर्थ है ''व्यवस्था के अनुसार।'' लोगों के लिए इस्तेमाल किए जाने पर यह उन लोगों का वर्णन करता है जो ''धर्मी'' या ''ईमानदार'' हैं।[44]

एक लेखक के रूप में पौलुस इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों के प्रति बड़ा चौकस था। कई जगह उसने ''व्यवस्था के अधीन'' होने की बात की; और यदि वह कहना चाहता था कि वह मसीह की ''व्यवस्था के अधीन'' है तो असानी से *hupo nomon* या कोई ऐसा शब्द इस्तेमाल कर सकता था परन्तु उसने यहां ऐसा नहीं किया। उसने इस असामान्य शब्द *ennomos* को क्यों चुना जो नये नियम में केवल दो बार (प्रेरितों 19:39; 1 कुरिन्थियों 9:21) और LXX में केवल एक बार मिलता है?

दोनों वाचाओं के बीच अंतर। मुख्य उत्तर को दोनों वाचाओं के प्रति पौलुस के व्यवहार में देखा जा सकता है जो गलातियों के नाम पत्र का मुख्य विषय है यानी व्यवस्था और सुसमाचार। व्यवस्था ''दासत्व का जुआ'' है जो असहनीय है (गलातियों 5:1; देखें प्रेरितों 15:10)। बाद वाली वाचा यानी सुसमाचार शिष्यता का यीशु का जुआ है जिसे उसने अपने करूणामय स्नेही निमन्त्रण में सब लोगों को देने की पेशकश की। उसने कहा कि उसका ''जुआ सहज है'' और उसका ''बोझ हलका है'' (मत्ती 11:28-30)। सबसे बड़े पापी के रूप में अनुग्रह दिखाए जाने पर पौलुस ने इस विरोधाभास को अपने आप में देखा था (1 तीमुथियुस 1:15; KJV)। उसे पाप के अपने बोझ से छुड़ाया गया था। इसलिए उसने गलातियों से आग्रह किया, ''मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अत: इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो'' (गलातियों 5:1)।

आज्ञाओं पर ज़ोर क्रम देना। पौलुस ने मसीह के साथ अपने खुद के सम्बन्ध को दिखाने के लिए *ennomos* शब्द क्यों चुना? यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत लगता है कि 1 कुरिन्थियों 9:21 में *ennomos* अभिव्यक्ति का इस्तेमाल करके पौलुस जानबूझकर अपने प्रेमी और अनुग्रहकारी प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध के वर्णन के लिए ''अधीन'' जैसी अवधारणा से संकोच कर रहा था। शब्दों की अपनी पसन्द से प्रेरित ने इस विचार को टाल दिया कि मसीह के लिए

उसकी सेवा एक बोझ था जिसके अधीन उसे परिश्रम करना पड़ रहा था क्योंकि वह मसीह की व्यवस्था के *अंदर* था। हमारा दृढ़ निश्चय है कि यह ''व्यवस्था'' अर्थात प्रेम की आज्ञा है जो मानवीय सम्बन्धों की हर बात के सम्बन्ध में हमारे प्रभु ने सबसे बड़ी आज्ञा के रूप में मानी। प्रेम व्यवस्था में श्रेष्ठ है (लैव्यव्यवस्था 19:18); यह सुसमाचार में भी प्रमुख है (मत्ती 7:12[45])।

वह महान, प्रेम की अति महत्वपूर्ण आज्ञा अपने प्रिय प्रभु की ओर से पौलुस की हर प्रेरणा को संचालित करती और उसके हर बलिदान की प्रेरणा थी। आखिर यीशु ने उसके लिए जो सबसे बड़ा पापी था, क्रूस की पीड़ा और लज्जा को सहकर उसे क्षमा कर दिया था! अब वह किसी बाहरी दायित्व की सेवा नहीं करता था बल्कि परमेश्वर और अपने साथी मनुष्य के लिए प्रेम से भरा हुआ था जो उसे परमेश्वर के अपने आत्मा के वास से मिला था।

मसीह का शिष्य होना। जिस प्रेम की हम बात करते हैं उसका अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि हम सुसमाचार में (यानी नये नियम में) व्यक्त परमेश्वर की किसी भी या हर आज्ञा या प्रभु की शिक्षा को इसके व्यापक अर्थ में रद्द करें। यीशु के चेलों को प्रेरणा देने वाला प्रेम केवल भावना तक सीमित नहीं है। यीशु ने अपने प्रेरितों को साफ़-साफ़ आज्ञा दी ''सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है'' (मत्ती 28:19, 20क)। उनके लिए इससे कम करने का अर्थ था कि उन्होंने आज्ञा नहीं मानी और इससे पूरे संसार में उसी का मिशन जोखिम में पड़ जाना था। परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति हमारी इच्छा को बदलने के उनके लक्ष्य के रूप में परमेवर का प्रेम और अनुग्रह और करूणा हमें उसकी आज्ञा मानने से नहीं रोकते।

अपना पूरा प्रयास करने पर भी हमें परमेश्वर के हृदय से हमारे लिए उपलब्ध सारे प्रेम, अनुग्रह और करूणा की आवश्यकता होती है। ''वे काम जिनकी आज्ञा दी गई है'' कर लेने के बाद हम जानते हैं कि हमने कोई कमाई नहीं की (लूका 17:10)। हम यह भी जानते हैं कि उसका प्रेम महान है। उद्धार अनुग्रह से है और हमेशा रहेगा। इसके बावजूद नये नियम की सुसंगत शिक्षा यह है कि न्याय हमारे कामों के अनुसार होगा।[46]

''प्रेम की व्यवस्था'' से बंधा पौलुस, जिसका पता उसे मसीह यीशु में चला था, अपने आपको यीशु के गुलाम या दास के रूप में देखता था (*doulos*, 1:10; रोमियों 1:1; फिलिप्पियों 1:1)। दास के रूप में भी वह ''मसीह की व्यवस्था'' से घिरा और उसकी आगोश में था। वह उसी कारण स्वतंत्र था जैसे यीशु ने यहूदियों को बताया था, ''यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे'' (यूहन्ना 8:36)।

डब्ल्यू. गटब्रोड ने लिखा है, ''यह पूछा जा सकता है कि किसी को *nomos* [नोमोस] की मसीही समझ की समझ न हो जिसे परमेश्वर से प्रेम करने के लिए पड़ोसी से प्रेम की आज्ञा को मसीह की व्यवस्था मानती है और इस प्रकार सही मायने में यही व्यवस्था मानती है।''[47] ऐसा लगता है कि इस विषय पर गटब्रॉड पौलुस की सोच के बहुत करीब आ गया था। यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)। उसके प्रिय शिष्य यूहन्ना ने कहा, ''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं'' (1 यूहन्ना 2:3); ''क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं'' (1 यूहन्ना 5:3)। हमारा मानना है कि यह न केवल

''मसीह की व्यवस्था'' का सार दिखाता है बल्कि हमें यह भी बताता है कि यह व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की सब बातों को पूरा क्यों करती है।[48]

धोखे से बचना (6:7)

पौलुस ने गलातियों को चेतावनी दी ''... धोखा न खाओ'' (6:7)। धोखा देने वाले के चतुराई भरे कामों से संसार में, बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी अव्यवस्था, उलझन और दुख मिला है। उसकी शिक्षाओं के कारण हम अपने पुराने पुरखाओं के पदचिह्नों पर चलें: ''इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)। इसी पाप के द्वारा मृत्यु हम पर आई है: ''इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया'' (रोमियों 5:12)। सबसे बुनियादी और अपने वजूद का निर्विवाद तथ्य से कि हम सब पापी हैं आगे बढ़ने के सिवाय हमारे पास अपने पवित्र और सर्वज्ञानी परमेश्वर के साथ सम्बन्ध की शुरुआत करने का कोई रास्ता नहीं है। क्षमा के प्रति पहला कदम हमारा अपने पापों को मान लेना है; फिर हमें उद्धार के उसके मार्ग में चलने के लिए अपने आपको देना आवश्यक है। चाहे ''पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, ... परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:23)। मसीह में, आशा है!

आत्मिक दान (6:6-10)

मसीही लोगों के रूप में हमें यह जानना आवश्यक है कि मसीह के काम को बढ़ाने और आर्थिक रूप में देना और ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए अपनी चीज़ों को बांटना धर्म के सबसे निरोल प्रदर्शनों में से है।

पौलुस ने अपने और बरनबास के सम्बन्ध में कुरिन्थियों से पूछा, ''अत: जब कि हम ने तुम्हारे लिये आत्मिक वस्तुएं बोई, तो क्या यह कोई बड़ी बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं की फसल काटें?'' (1 कुरिन्थियों 9:11)। उसने यह प्रश्न व्यवस्थाविवरण 25:4 में से उद्धृत करने के बाद पूछा: ''क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, दांवते समय चलते हुए बैल का मुंह न बान्धना'' (1 कुरिन्थियों 9:9क)।

मसीह द्वारा आरम्भ की गई वास्तविक आराधना को पुराने नियम की आराधना के बाहरी पहलुओं से बिल्कुल अलग बताते हुए इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों से आग्रह किया:

> इसलिए हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें। पर भलाई करना, और उदारता [*koinōnia*, कोयनोनिया] न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है (इब्रानियों 13:15, 16)।

यूनानी शब्द *koinōnia* का अनुवाद आम तौर पर ''संगति या सहभागिता'' के रूप में किया जाता है (प्रेरितों 2:42; 1 कुरिन्थियों 1:9; फिलिप्पियों 2:1; 3:10); परन्तु इसका

अनुवाद ''चंदा'' (रोमियों 15:26), ''सहभागिता'' (1 कुरिन्थियों 10:16), ''मेल जोल'' (2 कुरिन्थियों 6:14), और ''भागी'' किया जा सकता है (2 कुरिन्थियों 8:4)। यह शब्द सामाजिक रूप में मिलने की परम्परागत अवधारणा से कहीं अधिक आगे निकल जाता है जिसमें खाना पीना शामिल होता है, चाहे इनमें भी बांटने का विचार हो सकता है। कई मामलों में *koinōnia* सुसमाचार के प्रचार में सहायता के लिए आर्थिक रूप में देना होता है ताकि आत्माएं बचाई जा सकें। पौलुस ने फिलिप्पियों की ''सुसमाचार के फैलाने में सहभागी'' होने के लिए सराहना की (फिलिप्पियों 1:5)। उनकी आर्थिक सहायता से वह प्रचार करने और सिखाने में और अधिक समय दे पाया जिससे खोए हुए लोगों को मनपरिवर्तन का अवसर मिल गया।

याकूब ने असली धर्म क्या होता है उसका वर्णन किया: ''हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आपको संसार से निष्कलंक रखें'' (याकूब 1:27)। ''भक्ति'' के लिए इस्तेमाल किया गया यूनानी भाषा का शब्द (*thrēskeia*) ईश्वरीय आराधना के सबसे विशेष शब्दों में से एक है। इस संदर्भ में इसका इस्तेमाल हमें बहुत कुछ बताता है कि वास्तविक आराधना में क्या क्या होता है। इसका भवन की सुन्दरता या सजावट या आदमियों की पोशाक से कोई खास सम्बन्ध नहीं है जैसा कि कुछ लोगों का मानना है कि परमेश्वर की सही आराधना के लिए आवश्यक है। इसका सम्बन्ध मन की अवस्था और नज़रों से है जो अपने साथी की आवश्यकताओं पर केन्द्रित होनी चाहिए।

याकूब 1:27 में ''सुधि लेना'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द (*episkeptomai*) भी महत्वपूर्ण है। इसका सम्बन्ध संज्ञा शब्द ''निगरान'' (*episkopos*) से है जो ''प्राचीन ऐल्डर'' या ''प्रेसबिटर'' जैसा ही है। इस शब्द में अंग्रेज़ी बोलने वाले के मन में आने वाले शब्द विज़िट से अधिक बातें पाई जाती हैं। यह मित्रतापूर्वक किसी से मिलने के लिए जाने से आगे निकल जाता है, जिसमें दूसरों के लिए परवाह करना है।

पुराने नियम में ही विधवाओं की देखभाल पर ज़ोर नहीं दिया जाता था, बल्कि स्पष्टतया आरम्भिक कलीसिया में जरूरतमंदों की देखभाल को भी आवश्यक माना जाता था।[49] पौलुस ने उनकी देखभाल के लिए विशेष नियम और पाबंदियां बताईं। कलीसिया की ओर से सहायता पाने के लिए पहली योग्यता उनकी वास्तविक आवश्यकता का होना था। परिवार के विश्वासी सदस्यों की ज़िम्मेदारी अपनी विधवा रिश्तेदारों की सहायता करने की थी ताकि कलीसिया पर ''भार'' न पड़े और ''उनकी सहायता कर सके जो सचमुच विधवाएं हैं'' (1 तीमुथियुस 5:16)। और भी बातों पर ध्यान देना आवश्यक था जैसे, पुराना व्यवहार और लोकमत, भी उस संदर्भ में गिने गए हैं (1 तीमुथियुस 5:9-15)।

गलातियों 6 में, पौलुस ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर को भाने वाला व्यवहार व्यक्ति के आर्थिक प्रबन्ध और दान करना है। परमेश्वर को केवल कलीसिया के लोगों की ही आवश्यकताओं की चिंता नहीं है बल्कि इससे बाहर वालों की ज़रूरतों का भी ध्यान है। भाइयों के लिए पौलुस की शिक्षा में सब को शामिल किया गया:

> हम भले काम करने में साहस न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों तो ठीक समय पर

कटनी काटेंगे। इसलिये जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई करें, विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ (6:9, 10)।

हमें विशेषकर अन्य मसीही लोगों की सहायता करनी चाहिए, परन्तु यह नहीं कि केवल उन्हीं की। आखिर यीशु किसका उद्धार करने के लिए आया? क्या उन लोगों का नहीं जो परमेश्वर के अनुग्रह के आंगन से बाहर हैं और जिन्हें दया और करूणा के कामों को देखने की अत्यन्त आवश्यकता है जो उन लोगों में होने चाहिए जो उसे जान गए हैं (मत्ती 5:16)? हम अपने आपको यह बताते हुए कि "हम उनकी कोई सहायता नहीं कर सकते। क्या यीशु ने भी नहीं कहा कि निर्धन सदा हमारे साथ रहेंगे [मरकुस 14:7]?" मुंह नहीं फेर सकते।

आम तौर पर संसार में सुसमाचार पहुंचाने के सबसे प्रभावी ढंगों में से एक भलाई करना और दया के काम करना है। वे परमेश्वर के आत्मा को साफ़-साफ़ दिखाते हैं जिससे आम तौर पर लोगों के मनों को परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए नरम कर सकते हैं। बहुत से लोग अनजाने में हमारे प्रेम रहित संसार में परमेश्वर और जीवन के अर्थ की तलाश में हैं। बेशक हम में से कई सहायता के लिए पुकारने वाली भीड़ को देखकर भलाई करने से हिम्मत हार बैठे हैं और उन्होंने अपने दान को आराधना सभा में दिए जाने वाले चंदे तक सीमित करने का निर्णय कर लिया है। बेशक यह सच है कि हम अपने संसार के हर दुख को कभी दूर नहीं कर सकते पर हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। क्या यीशु ने अंधों की पुकार सुनकर नज़र फेर ली थी, "हे प्रभु, दाऊद की संतान, हम पर दया कर!" (मत्ती 20:31)? क्या धन्य सामरी की कहानी वाले याजक और लेवी की तरह वह (देखें लूका 10:30-32), कतराकर चला गया? इसके विपरीत मत्ती ने लिखा, "यीशु ने तरस खाकर उनकी आंखें छूई और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिये" (मत्ती 20:34)। क्या हम कल्पना भी कर सकते हैं कि उसने इसके उलट किया होगा?

पृथ्वी पर अपनी सेवकाई के तीन साल के छोटे से अरसे के दौरान यीशु ने पलस्तीन के हर दुखी को चंगाई नहीं दी थी। न ही हम हर दुखी और पीड़ित व्यक्ति को राहत दे सकते हैं जो हम से मिलता है। परन्तु हम कुछ लोगों को सम्भालकर उन्हें दुख या परेशानी से राहत दे सकते हैं। काश हम इस निचोड़ तक कभी न पहुंचे कि हम उनकी परेशानियों के लिए करुणा नहीं रख सकते।

बोना और काटना (6:7, 8)

गलातियों 6:7, 8 बाइबल के इस नियम को बताता है कि "मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।" बोने और काटने की भाषा इस प्रकार के भजनों में मिलती है:

क्या तुम राज्य का बीज बो रहो हो,
चमकीली और खुबसूरत सुबह?
चमकती धूप की रोशनी?
कटनी का समय निकट आ रहा है,
और जब जल खत्म हो जाएगा
क्या तुम्हारे बहुत से पूले होंगे?

क्या तुम कुछ इकट्ठा करोगे,
कटनी के घर में इकट्ठा करने के लिए?[50]

बचपन में मुझे यह शब्द बड़े गम्भीर लगते थे। मेरा जन्म बूढ़े नाना के खेत में हुआ था। उस ज़माने में जो बड़ी मंदी का समय था, मेरे परिवार के लोगों को जैसे मालूम होता था कि असल में सब कुछ भूमि के फल पर निर्भर है। जब सूरज निकलता पर मौसम पर बारिश न होती तो बड़ी चिंता हो जाती थी। मेरे पिता के कठिन परिश्रम और ज़बर्दस्त विश्वास और मेरे माता पिता की प्रार्थना के बावजूद, भविष्य के बारे में कुछ संदेह रहता ही था।

एक आनन्द भरा गीत जिसे हम उन दिनों गाते थे उसके बोल इस प्रकार थे:

सुबह के वक्त हम होते, बोते बीज इलाही,
बोते जब हो गर्मी, शाम का हो अमल;
खेत को अब हम देखते, काटने का है मौसम,
सना, सना गाते, काटेंगे फसल।[51]

भूमि की फसल पर निर्भर हम सच्चे आनन्द के साथ, यह प्रार्थना करते हुए विश्वास को इतनी सरलता से जताते थे कि हर साल की फसल हमारी आशाओं को पूरा करती थी। यह गीत गेहूं की फसल से सम्बन्धित था जबकि मेरा परिवार मकई और सब्जियों वाले देश में रहता था। उन बच्चों की तरह जिन्होंने कभी ''पूले'' न देखें हों, हमें कल्पना के द्वारा समझाया जाता था। ऐसे गीतों में हमारे अनन्द से इससे कमी नहीं आती, क्योंकि हम अच्छी तरह जानते थे कि आने वाले साल में थोड़ी फसल के मौसम का हमारे जीवन में कितना महत्व रहता है।

भलाई करना (6:9, 10)

पौलुस ने गलातिया के मसीही भाइयों को समझाया, ''हम भले काम को न छोड़ें'' (6:9क)। संसार में हों या कलीसिया में, समस्याएं तो आएंगी ही जिन्हें पार करना आवश्यक है। जैसा आज से दो हज़ार साल पहले जब उसने इस पत्री को लिखा था, वैसा ही आज भी है।

फिर विरोधियों ने पौलुस की प्रेरिताई के अधिकार पर सवाल उठाया था जैसा कि आज भी कुछ धर्मशास्त्री उठाते हैं। उनका तर्क होता है कि प्रेरित उसको जब अपनी पत्रियों को लिख रहा था तो यह अंदाजा नहीं था कि वह परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया पवित्र शास्त्र लिख रहा है। उनका कहना होता है कि इसके बजाय वह उन्हें अपने यहूदी भाइयों द्वारा गुमराह होने से बचाने के लिए अपनी ''भेड़ों'' के स्थानीय झुण्ड को संतुष्ट करने की कोशिश कर रहा था। उनका दावा होता है कि पौलुस इसलिए लिख रहा था ताकि यहूदी और अन्यजाति मसीही एक दूसरे के साथ मिलकर चलें।

ऐसे विचार भ्रमित करने वाले हैं। पौलुस के लिए शिक्षा का सचमुच में महत्व था! प्रकट की गई सच्चाई के साथ समझौता करना कभी भी स्वीकार्य समाधान नहीं है। जब सच्चाई के साथ समझौता किया जाता है तो यह आम तौर पर उन सबसे अधिक विश्वासी भाइयों की कीमत पर होता है जो ''हिम्मत हारकर'' निराश हो जाते हैं। जब सच्चाई को सच्चाई के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता, तो मसीह का अधिकार प्रभावित होता है और आत्मा की सामर्थ बुझती है।

इसके अलावा पौलुस इस बात से परिचित था कि उसके लेख परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए हैं (1:11, 12; देखें 1 कुरिन्थियों 14:37, 38)। पतरस का भी यही दृष्टिकोण था (2 पतरस 3:14-16)। पवित्र शास्त्र की किसी भी सच्चाई पर किसी भी गलती को हल्के से नहीं लिया जाना चाहिए। बल्कि कोई भी प्रचारक हो, सिखाने वाला, प्रोफेसर या थियोलॉजियन जो पवित्र शास्त्र के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का इनकार करता है वह केवल गलती का दोषी नहीं है। इस प्रकार का इनकार व्यवस्थित गलती है और इसे बढ़ावा देने वाले किसी भी व्यक्ति को झूठे शिक्षक के रूप में चिह्नित किया जाना चाहिए।[52] गलातिया की स्थिति पर यह बात खास तौर पर लागू होती थी जो पौलुस ने तीमुथियुस को लिखी:

> आज्ञा का सारांश यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपटरहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो। इनको छोड़कर कितने लोग फिरकर बकवाद की ओर भटक गए हैं। और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिन को दृढ़ता से बोलते हैं, उन को समझते भी नहीं (1 तीमुथियुस 1:5-7)।

''जहां तक अवसर मिले हम सब के साथ भलाई'' करना ''विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ'' (6:10) बहुत प्रकार से चेतावनी भी है जो जाति, लिंग, या आर्थिक स्थिति के आधार पर अलगाव या पक्षपात को रोकती है। दूसरों की सहायता करते हुए मसीही लोगों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रभु की कलीसिया के लोगों का ध्यान पहले रखा जाए। सामाजिक सम्बन्धों में मसीही व्यक्ति को जहां तक हो सके मसीही लोगों के साथ हो या अविश्वासियों के साथ किसी को भी ठोकर देने से बचना चाहिए, तब भी यदि अपने विशेषाधिकारों का त्याग करने की बात कही जाए।[53]

आरम्भिक मसीहियों के लिए राजनैतिक रूप में प्रभावशाली रोमियों, सांस्कृतिक रूप में श्रेष्ठ यूनानियों और धार्मिक तथा नैतिक रूप में श्रेष्ठ पहली सदी के यहूदियों की धार्मिक पृष्ठभूमियों तथा सांस्कृतिक मानकों को मिलाना, चाहे वह पवित्र आत्मा की सहायता से ही हो, कोई छोटा कारनामा नहीं था। पवित्र आत्मा के द्वारा इन सब को एक दूसरे के साथ सार्थक संगति के योग्य स्थानीय समूहों (मण्डलियों) में लाया गया था। स्पष्टतया इसके लिए इसमें शामिल सभी लोगों का बलिदान आवश्यक थी। सिर ढकना, शुद्ध और अशुद्ध भोजन, पवित्र दिन, खतना और मूर्तों को चढ़ाए गए भोजन कुछ ऐसे मुद्दे थे जिन पर ध्यान दिया जाना और विचार किया जाना आवश्यक था।

कई बार भाषा भी जहरीली बन सकती है। शब्द ''प्रभु'' (*kurios*) मसीही व्यक्ति को इस खतरनाक सवाल में डाल सकता था कि प्रभु कौन है, मसीह या कैसर। यह कैसर को मानने और मसीह का इनकार करने या फिर मसीह का अंगीकार करके शहीद की मौत मरने का मामला भी बन सकता था।

जिस समय पौलुस अपने आरम्भिक खतों को लिख रहा था तब तीन प्रमुख संस्कृतियों में से मनपरिवर्तन करने वालों को एक करना कठिन रहा होगा। समर्पित चेला होने के कारण पौलुस डटा रहा। समय के साथ वह कई जातीय तौर पर अलग-अलग मण्डलियां स्थापित करने में सफल हो गया जो न केवल एक दूसरे को स्वीकार करती थीं बल्कि एक दूसरे को सहायता

भी करती थीं। प्रेरितों के काम के साथ साथ उसके अपने लेखों से हम यूनान, मकिदुनिया और एशिया माइनर की प्रमुख तौर पर अन्यजाति कलीसियाओं में फलस्तीन के यहूदी मसीहियों के निर्धनों के लिए उदारता से देने को देखते हैं।[54]

पक्षपात दिखाना (6:12, 13)

गलातिया में पौलुस ने मसीही लोगों को बताया, ''जो लोग शारीरिक दिखावा चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के लिये *दबाव डालते हैं*'' (6:12क)। इन शब्दों में हमें अंताकिया में उस बुरे दिन की सुस्पष्ट आवाज सुनाई देती है जब पौलुस ने पतरस को सब के सामने डांटा था। पौलुस ने 2:14 की कहानी के बारे में बताया: ''मैं ने सब के सामने कैफा से कहा, जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है और यहूदियों के समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों *कहता है*?''

पतरस का जानबूझकर किसी को खतना करवाने के लिए विवश करने का कोई इरादा नहीं था, पर अपने नमूने के द्वारा वह अन्यजातियों पर बिल्कुल यही करने का दबाव बना रहा था। वह पूरी मसीही लहर में सबसे प्रमुख और प्रभावशाली अगुओं में से एक था। पतरस को यीशु ने केवल स्वर्ग के राज्य की कुंजियां ही नहीं दी,[55] बल्कि उसका उपनाम ''चट्टान'' भी रखा था (देखें यूहन्ना 1:42[56])। फिर भी कुछ परिस्थितियों में, पतरस निराशाजनक ढंग से कमज़ोर हो सकता था। यहां पर एक सबक मिलता है जो हम सब को प्रभावित करता है कि जब हम पीछे मुड़ते और खामोश हो जाते या भीड़ के साथ खामोशी से चलने लगते हैं, तो हमारा अपना नमूना दूसरों को वैसे ही करने लिए दबाव डाल सकता है जिसका परिणाम भयंकर हो सकता है।

पतरस की कहानी हमें याद दिलाती है कि जातीयता के सम्बन्ध में परमेश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। पिन्तेकुस्त के दिन जब उसने और अन्य प्रेरितों ने सुसमाचार सुनाया था तो उनके सुनने वालों के हृदय छिद गए तो उन्होंने पूछा था कि वे क्या करें। पतरस से सब को बताया था, ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। उसने केवल इतना ही नहीं कहा था इसके बजाय उसने आगे कहा था, ''क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर *के* लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)।

पतरस को आत्मा की प्रेरणा से दिए गए अपने शब्दों का अर्थ पूरी तरह से तब तक समझ नहीं आया था जब तक उसे परमेश्वर द्वारा कई साल बाद कुरनेलियुस के घर नहीं भेजा गया। उस वक्त पतरस ने कहा, ''अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म केकाम करता है, वह उसे भाता है'' (प्रेरितों 10:34, 35)। इस संदर्भ में ''उससे डरता'' का अर्थ ''उसकी भक्ति करता'' है, जो कि कुरनेलियुस नामक आदमी की खूबी थी (प्रेरितों 10:1, 2, 22)।

प्रेरितों 10:34, 35 में पतरस की एक और महत्वपूर्ण बात ''किसी का पक्ष'' (*prosōpolēmptēs*) है, जिसका अनुवाद ''लोगों का लिहाज़ करने वाला'' (KJV) भी हो सकता है। यह ''ग्रहण'' या ''स्वीकार'' (*lambanō*) के साथ ''चेहरा'' या ''बाहरी रूप''

(*prosōpon*) को मिलाता हुआ एक मिश्रित शब्द है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस शब्द का अर्थ किसी के प्रति, विशेषकर निर्णय लेने में ''पक्षपात दिखाना'' या ''प्राथमिकता दिखाना'' है।

नया नियम इस व्यवहार की निंदा करता है। उदाहरण के लिए याकूब ने निर्धनों के ऊपर धनवानों को या मैले कुचैले कपड़े पहनने वाले से बढ़कर सूट बूट पहनने वालों को विशेष सम्मान देने के विरुद्ध लिखा (याकूब 2:1-9)। पौलुस ने उनका विरोध किया ''जो मन पर नहीं, बरन दिखावटी बातों पर घमण्ड करते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:12)। परमेश्वर जातीयता के आधार पर पक्षपात नहीं दिखाता (रोमियों 2:5-11) और हमें भी नहीं दिखाना चाहिए। यह बात विशेषकर मसीही सम्बन्धों पर लागू होती है: ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो'' (गलातियों 3:28, 29)। सामाजिक, आर्थिक या जातीय आधार पर किया जाने वाला कोई भी अंतर ''शारीरिक'' हैं और इसलिए आत्मा की सोच के विपरीत है जो आत्मिक व्यक्ति में वास करता है (5:16-18; रोमियों 8:5-9)।

शरीर में घमण्ड करना (6:12-15)

''शरीर'' (*sarx*) शब्द के पापपूर्ण झुकाव (''शरीर के काम''; 5:19-21) से लेकर शारीरिक वासना से स्वाभाविक पतन तक कई अर्थ हैं। 6:12, 13 में अन्यजातियों के खतने की बात है, इसलिए यह स्पष्ट है कि ''शारीरिक दिखावा'' और ''तुम्हारी शारीरिक दशा पर घमण्ड'' वाक्यांशों में सचमुच शारीरिक कामना की बात है। यहां इसकी परिभाषा चाहे जो भी हो पर किसी का ''शरीर'' कभी कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें व्यक्ति घमण्ड करे।

2 कुरिन्थियों 5:16 में पौलुस ने कहा कि अब वह दूसरों को उनके शारीरिक गुणों या व्यक्तिगत प्राप्तियों के आधार पर नहीं देखता। उसने लिखा, ''सो अब से हम किसी को *शरीर के अनुसार* ['सांसारिक दृष्टिकोण से'; NIV] न समझेंगे, और यदि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उस को ऐसा नहीं जानेंगे।'' मसीही लोगों के बीच खानदान, सामाजिक रुतबे या खास निजी गुणों के आधार पर घमण्ड करने के लिए कोई गुंजाइश नहीं है।

पौलुस ने ऐसे घमण्ड करने का विरोध किया, चाहे सांसारिक तौर पर कहें तो उसके अपने दावे इसी तथ्य पर अधारित होते। तर्क देने के लिए उसने 2 कुरिन्थियों 11:16—12:13 में अपने खुद के दावे बताए, परन्तु साथ ही पूरी चर्चा को मूर्खता कहकर उसकी निंदा की (2 कुरिन्थियों 11:16; 12:11)। ऐसे मामलों पर पौलुस की नीति के सम्बन्ध में, उसका मन उसके कुरिन्थुस में आने से पहले ही बना हुआ था। 1 कुरिन्थियों 1:31 में उसने कहा, ''ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, ''जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे।'' फिर उसने अपनी सेवकाई का वर्णन किया:

> हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो शब्दों या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं। मैं निर्बलता और भय के साथ, और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा; और मेरे वचन, और मेरे प्रचार

> में ज्ञान की लुभानेवाली बातें नहीं, परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण था, इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो (1 कुरिन्थियों 2:1-5)।

यहूदी मत की शिक्षा देने वाले लोग परमेश्वर के खास लोगों के रूप में यहूदी जाति के पिछले इतिहास में भरोसा रखने यानी पिता अब्राहम और बड़े भविष्यवक्ता मूसा की ओर वापस जाने के लिए भ्रमित किए गए थे। इसके अलावा उनके लिए अन्यजाति मसीहियों पर खतने की बात थोपना और अपनी ''शारीरिक दशा पर घमण्ड'' करना गलत था (गलातियों 6:13)। उद्धार यहूदी मत में परिवर्तित होने से नहीं बल्कि मसीह में परिवर्तित होने से होता है। पौलुस ने लिखा, ''पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं'' (6:14)।

खतना किए हुए मन (6:12-15)

6:15 में पौलुस ने कहा, ''क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि।'' अन्य शब्दों में, परमेश्वर हमारे मनों का खतना करवाना चाहता है। यिर्मयाह के द्वारा परमेश्वर ने कहा:

> अपनी पड़ती भूमि को जोतो, और कटीले झाड़ों में बीज मत बोओ। हे यहूदा के लोगो और यरूशलेम के निवासियो, यहोवा के लिये अपना खतना करो; हां, अपने मन का खतना करो (यिर्मयाह 4:3, 4क)।

आज यिर्मयाह को आम तौर पर ''रोने वाला नबी'' कहा जाता है। परमेश्वर के ''पैगम्बर'' के रूप में वह भविष्य में होने वाले उस विनाश को जो देख सकता था उसके लोगों पर पड़ने वाला था। यिर्मयाह अपनी जाति के लोगों से अत्यधिक प्रेम करता था और यही कारण था कि उनकी बर्बादी पर रोने के अलावा और वह कुछ नहीं कर सकता था। इस पतन की बात कहते हुए जो शब्द उसने कहे वे उसके अपने नहीं थे, बल्कि वे उसे परमेश्वर की ओर से दिए गए थे। संदेश में आगे कहा गया:

> नहीं तो तुम्हारे बुरे कामों के कारण मेरा क्रोध आग की नाई भड़केगा, और ऐसा होगा की कोई उसे बुझा न सकेगा (यिर्मयाह 4:4ख)।

यह रूपक इस बात का संकेत देता है कि उनके मन ऐसे होने आवश्यक थे जो उनकी अपनी बुराई से टूट गए हों। धर्म के बाहरी कार्यों के उनके दिखावे के लिए उनके मन परमेश्वर के साथ सीधे नहीं थे। धार्मिकता का फल बाहरी सांसारिक रस्मों से कहीं बढ़कर होना आवश्यक है। परमेश्वर जानता है कि मनुष्य के अंदर क्या है और जब मन बुराई से भरा हुआ हो तो समझदार काफिर भी विरोधाभास में से देख लेंगे। झाड़ियों में बोई गई चीज़ धार्मिकता का वह फल नहीं ला सकती जिसके लिए इस्राएल को ''जातियों के लिए प्रकाश'' होने के लिए बुलाया और अलग किया गया (यशायाह 42:6)। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने बताया, ''जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा ...'' (मत्ती 7:21)।

''पड़ती भूमि'' के सम्बन्ध में होशे के शब्द और भी सार्थक हैं:

> अपने लिये धर्म का बीज बोओ, तब करुणा के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे हो लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए। तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने धोखे का फल खाया है। और यह इसलिये हुआ क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था। इस कारण तुम्हारे लोगों में हुल्लड़ उठेगा, और तुम्हारे सब गढ़ ऐसे नाश किए जाएंगे ... (होशे 10:12-14)।

इन शब्दों का सामना करना कठिन है, परन्तु ये शब्द ऐसी भविष्यवाणियों में आने पर सांत्वना, प्रतिज्ञा और आशीष भरे शब्दों के साथ साथ दिए जाते थे (होशे 11:1-4)।

''पड़ती भूमि'' से नबियों का क्या भाव होता था? यह उस खेत को कहा जाता है जिसमें साल भर से न तो बोया गया हो और न काटा गया हो। ज़मीन को अत्याधिक उपयोग से आराम देना इसे खराब होने और बंजर होने से बचाता है। ऐसा करने की आज्ञा परमेश्वर ने व्यवस्था में दी थी कि प्रत्येक सब्त के वर्ष में भूमि बिना बोये रहे (निर्गमन 23:10, 11; लैव्यव्यवस्था 25:2-6)।

यूरोप में यह ज्ञान पीढ़ी से पीढ़ी आगे दिया गया है जिसका परिणाम यह हुआ कि जर्मन लोग अपनी ज़मीन को खाद और फसल के अदल बदल कर बोने के साथ ''बनाने'' के अपने कौशल के लिए प्रसिद्ध हैं। असल में ''किसान'' के लिए अंग्रेज़ी भाषा का शब्द अंग्रेज़ी भाषा का शब्द ''फार्मर'' जर्मन शब्द ''बाउर'' है जो मूलतया ''बिल्डर'' है। परन्तु अमेरिकी सीमा पर किसानों को यह ज्ञान हमेशा से नहीं था। उनके पास लगभग असीमित भूमि बहुत मात्रा में उपलब्ध थी, इस कारण किसान आम तौर पर किसी और अच्छी ''नई जमीन'' को ढूंढ़ते, इसे साफ़ करते और जब तक यह अच्छी फसल देती रहती तब तक वे इसका इस्तेमाल करते। इसके बाद वे अपना सामान और औजार उठाकर अपनी गाड़ियों में डालते और किसी और इलाके की तलाश में निकल पड़ते जो उनका पसंदीदा होता था। यह प्रचलन चलता रहा जिसमें आम तौर पर वे पश्चिम की ओर ही जाते थे। यूरोपीय लोग जहां ''बिल्डर'' थे जो पीढ़ी दर पीढ़ी उसी ज़मीन पर खेती किया करते थे, वहीं अमेरिकी लोग ''खान खोदने वाले'' थे जिन्होंने अपनी ज़मीन खराब कर ली थी। उन्होंने फसल बदल बदलकर बोने के द्वारा पोषक तत्वों के साथ इसे उपजाऊ बनाने की आवश्यकता पर विचार किए बिना इसके पोषक तत्वों को खराब कर दिया।

जिस परमेश्वर ने पुराने नियम के अपने लोगों इस्राएलियों को बताया था कि उपयोगी मौसमों के लिए अपनी ज़मीन को किस प्रकार से उपजाऊ बनाना है। वही परमेश्वर है जो प्रेम से चाहता है कि उसका नया इस्राएल धार्मिकता के फल से उपजाऊ हो। इसके लिए उसने अपने आत्मा को उण्डेल दिया है जिसके द्वारा वह आत्मा का फल उपजाकर आत्मा के द्वारा (5:22, 23), उद्धार के लिए अपने जीवनों को पवित्र कर सकते हैं। हम उन खोई हुई लाखों आत्माओं को भी राह दिखा सकते हैं जो हमारे इस संसार में आत्मिक अंधकार और उलझन में इधर उधर टटोलते घूम रहे हैं। हम जो सही है उसे करने के लिए ढीले होने की (6:9; NRSV) अपने आपको अनुमति न दे। इसके बजाय हम आत्मा की ऊर्जावान शक्ति को अपना लें जिसे परमेश्वर

ने हमारे अन्दर बसाया है। हम कभी भी आधे नाप से या जो कुछ हम ने कर लिया है उसी को करने से संतुष्ट न हों। इसके बजाय विश्वास के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ का लाभ उठाएं जो किसी भी चीज़ से जो हम मांग सकते हैं या जिसकी हम कल्पना कर सकते हैं, बढ़कर है (इफिसियों 3:20, 21)।

व्यवस्था को संक्षिप्त किया गया (6:13)

यहूदी मत की शिक्षा देने वालों ने व्यवस्था थोपने का प्रयास करके उन पर कलीसियाओं पर गलत असर डाला था (1:6, 7; 3:1, 2)। 6:13 में पौलुस ने यह कहते हुए उनके कपट को उजागर किया, ''क्योंकि खतना करानेवाले स्वयं तो व्यवस्था पर नहीं चलते।'' प्रेरित की बात एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा करती है कि आज व्यवस्था का क्या महत्व है।

व्यवस्था (पुरानी वाचा) केवल इस्राएलियों के लिए था। मूसा की व्यवस्था परमेश्वर द्वारा इस्राएल जाति को दी गई थी (देखें निर्गमन 19:1-8) और कभी भी किसी और जाति को दिए जाने के लिए नहीं थी। इसका उद्देश्य मूसा के समय से लेकर मसीह के समय तक प्रभावी होने में था (देखें गलातियों 3:10-29)।

व्यवस्था (तोरह) और भविष्यवक्ता नई वाचा की बात करते हैं। पुराने नियम के लेखकों ने स्वयं पहले से देख लिया कि वह समय आएगा जब परमेश्वर एक नये भविष्यवक्ता के द्वारा अपने लोगों के साथ एक नई वाचा बांधेगा (व्यवस्थाविवरण 18:15-18; यिर्मयाह 31:31-34)।

नई वाचा बांधे जाने के बाद, व्यवस्था (पुरानी वाचा) पुरानी हो गई। इब्रानियों के लेखक ने यह संकेत देते हुए कि यह भविष्यवाणी पूरी हो चूकी थी, यिर्मयाह 31 से उद्धृत किया; नई वाचा परमेश्वर के नये इस्राएल (कलीसिया) के साथ बांधी जा चुकी थी। फिर उसने टिप्पणी की, ''नई वाचा की स्थापना से [परमेश्वर] ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया; और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है'' (इब्रानियों 8:13)। ''मिट जाना अनिवार्य है'' वाक्यांश के साथ निश्चय ही वह 70 ई. में रोमी सेना के द्वारा यरूशलेम में मन्दिर के विनाश की बात कर रहा था। इससे यहूदी मत के बलिदान बंद हो गए, जो कि व्यवस्था को मानने के लिए अनिवार्य थे।

व्यवस्था (और शेष पुराना नियम) आज भी परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ वचन है। पुराना नियम उसी प्रकार से प्रेरणा से दिया गया परमेश्वर का वचन है जैसे नया नियम है। 2 तीमुथियुस 3:16, 17 में पौलुस ने इसके सम्बन्ध में यह स्पष्ट कहा:

> हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (देखें 2 पतरस 1:20, 21; 3:1, 2, 14-16)।

व्यवस्था (और शेष पुराना नियम) हमें सिखाने और प्रोत्साहित करने का काम करती है। सुसमाचार के युग के आरम्भ में पुराना नियम ही मसीही व्यक्ति की एकमात्र बाइबल थी।

आरम्भिक विश्वासियों के लिए पौलुस ने इसके महत्व को समझाया: ''जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें'' (रोमियों 15:4)। पुराना नियम अनुसरण करने के लिए विश्वास के आदर्शों के साथ साथ (इब्रानियों 11) इसे न मानने के परिणामों के सम्बन्ध में हमें चेतावनियां देता है (1 कुरिन्थियों 10:1-12; इब्रानियों 3:7-13)। उन घटनाओं की जो उनके आरम्भ में कहे जाने के सैकड़ों साल बाद पूरी हुई थीं, विस्तृत भविष्यवाणियां देते हुए (उदाहरण, भजन 22; यशायाह 53; मीका 5:2), यह मसीह की ओर भी इशारा करती है (लूका 24:26, 27, 44-49; 2 तीमुथियुस 3:15)। बिना पुराने नियम के नये नियम की बहुत सी बातें जिन्हें, हम पढ़ते हैं, समझ में नहीं आतीं। शब्दकोष, विशेष शब्दावली और प्रतीकात्मक भाषा के सम्बन्ध में यह हमें कई भाषाई सहायता उपलब्ध कराती है। यह हमें भूगोल, इतिहास, संस्कृति तथा धर्मशास्त्र को समझने में भी सहायता करती है।

व्यवस्था (पुरानी वाचा) को नई वाचा के साथ मिलाना नहीं चाहिए। यहूदी मत की शिक्षा देने वाले लोग अन्यजाति मसीहियों पर व्यवस्था की बातें थोपने की कोशिश करके एक बुनियादी गलती कर रहे थे। कुछ नेक नीयत लोग आज यही गलती करते हैं जब वे किसी धार्मिक रीति के समर्थन के लिए पुरानी वाचा में से दिखाते हैं।

पाप के लिए मृत्यु और मसीह में नया जीवन (6:14, 15)

हमारे प्रभु की मृत्यु के बिना कोई छुटकारा सम्भव नहीं होना था। उसकी मृत्यु में उसके साथ एक हुए बिना यानी इस संसार के आकर्षणों और इसके अस्थाई खजानों से मरे बिना हम अपने छुटकारे के खजाने में साझी नहीं हो सकते (रोमियों 6:1-14; 1 यूहन्ना 2:15-17)।

क्रूस के चरणों में हम अपनी नज़रें उठाकर उस घटना को देखते हैं जिसने सारी मनुष्यजाति के इतिहास को ही बदल दिया। हम पाप के लिए अपनी मृत्यु तथा पश्चात्ताप में खुदी के लिए अपनी मृत्यु में उसके क्रूसारोहण की समानता में उसके पीछे चलने को मजबूर हो जाते हैं। इसलिए हम उसकी आज्ञा के अनुसार बपतिस्मे में अपने आपको उसके साथ गाड़े बिना नहीं रह सकते। विश्वास से नये जीवन की चाल चलने के लिए जी उठने के द्वारा (देखें रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:11, 12), हमें पवित्र आत्मा का दान दिए जाने से जिलाया जाता है।

एक नई सृष्टि (6:15)

पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि'' (6:15)। रोमियों 2:28, 29 में इसी ताड़ना की गूंज सुनाई देती है:

> क्योंकि यहूदी वह नहीं जो प्रगट में यहूदी है; और न वह खतना है, जो प्रगट में है, और देह में है। पर यहूदी वही है जो मन में है; और खतना वही है जो हृदय का और आत्मा में है, न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।

खतने का यह रूपक पुराना है, असल में उतना ही पुराना है जितना अब्राहम (उत्पत्ति

17:9-11)। पुराने नियम की कई विधियां और नियम थे, जैसे खतना, जिन्हें कड़ाई से मानना आवश्यक था, परन्तु अपने आप में वे अपने लोगों के लिए परमेश्वर की वास्तविक इच्छा की केवल ''परछाइयां'' या भविष्य में पूरी होने वाली बातें ही थीं। परमेश्वर की दिलचस्पी असल में मनुष्य के हृदय के खतने में है (मनुष्य की शारीरिक इच्छाओं को उतारने में), ताकि हम सचमुच में वैसे आज्ञाकार बन सकें जैसे पृथ्वी पर मनुष्य के निवास के आरम्भ में परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग बनें।[57]

''परछाइयों'' के सम्बन्ध में इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा, ''क्योंकि व्यवस्था जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का *प्रतिबिम्ब है*, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं'' (इब्रानियों 10:1)। मसीह के सम्बन्ध में उसने आगे कहा:

> ''बलिदान और भेंट तू ने न चाही, पर *मेरे लिए एक देह तैयार किया*। होम-बलियों और पाप-बलियों से तू प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैंने कहा, देख, मैं आ गया हूं (पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है) ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं'' (इब्रानियों 10:5ख-7)।

व्यवस्था के डेढ हज़ार से अधिक सालों तक प्रभावी रहने के दौरान विश्वासी इस्राएलियों द्वारा कितने हज़ार चुनिन्दा जानवरों की बलि दे दी गई होगी? यदि परमेश्वर ने न तो कभी चाहा और न ही उनमें उसे प्रसन्नता मिली, तो फिर उसने बलि मांगी क्यों? इन प्रश्नों के सम्बन्ध में कुछ विचार सहायक हो सकते हैं। (1) परमेश्वर जो कि सृष्टिकर्त्ता और सर्वशक्तिमान है, ने अपने खुद के कारणों से बलिदानों की आज्ञा दी और इस्राएल का काम केवल भरोसा करके आज्ञा मानना था। (2) परन्तु कोई भी बलिदान जो मनुष्य के लिए चाहे कितना भी कीमती हो या उसे कितना भी प्यारा क्यों न हो, इतना बड़ा नहीं है कि वह परमेश्वर के साथ वाचा का सम्बन्ध उसके पक्ष में कर सके, जो ''हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान'' देता है (याकूब 1:17; KJV)। (3) परमेश्वर ''हर्ष से देने वाले से'' प्रेम रखता है (2 कुरिन्थियों 9:7); और उसके लोगों को चाहे वे बाल अवस्था में, उन्हें देने के महत्व को सीखना आवश्यक था। (4) जानवरों के बलिदान से इस्राएलियों को परमेश्वर की पवित्रता के साथ साथ पाप की गम्भीरता का भी पता दिया गया। फिर भी मनुष्य का कोई भी दान, चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसके पापों को मिटा नहीं सकता था। केवल मसीह की देह, जो क्रूस पर दी गई, ऐसा कर सकी। यह परमेश्वर की खास और सिद्ध इच्छा थी (इब्रानियों 10:9, 10, 14)।

होने वाली बातों के ''प्रतिबिम्बों'' की सूची बड़ी है। कुछ बातें याजकाई और मन्दिर से सम्बन्धित थीं (इब्रानियों 8:5; 9:11; 10:1-18)। सूची में दूसरी बातें खाने पीने, पर्बों, नये चांद और सब्त के दिनों की थी (कुलुस्सियों 2:16)। ''क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं; परन्तु वास्तविकता मसीह में पाई जाती हैं'' (कुलुस्सियों 2:17; NIV)।

गलातियों 6:15 में पौलुस शारीरिक खतने से सम्बन्धित जो प्रासंगिकता बना रहा था वह स्पष्ट है कि परमेश्वर जो मनुष्य में चाहता है वह बाहरी, रस्मी बातें नहीं हैं। इसके बजाय वह ''एक नई सृष्टि'' चाहता है जिसमें मन के अंदर की बातें और आत्मा के अनुसार चलना शामिल

है (5:16, 18, 22, 23, 25)।

बपतिस्मा और नई सृष्टि (6:15)

रोमियों 6:4 और कुलुस्सियों 2:12 में "गाड़े गए" स्पष्टतया डुबकी का संकेत देता हुआ शब्द है, जो "बपतिस्मा" (*baptisma*) शब्द से सम्बन्धित है। यूनानी शब्द जिसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले तथा आरम्भिक मसीही लोगों द्वारा दिए जाने वाले बपतिस्मे में किया जाता था, डुबकी को छोड़ और कुछ नहीं हो सकता। इस तथ्य को ग्रीक ऑर्थोडोकस चर्च द्वारा समझाया जाता है जिसमें सदियों तक भाषा और व्यवहार दोनों में डुबकी (*baptisma*) को बराबर माना है; इसके अलावा इस शब्द का कोई अर्थ कभी समझा ही नहीं गया।[58] "छिड़काव" (*rhantizō*) और "उण्डेलना" (*ekcheō*) दोनों के लिए शब्द यूनानी बाइबल में पाए जाते हैं, परन्तु दोनों में से कोई भी शब्द नये नियम के पानी के बपतिस्मे के लिए कभी इस्तेमाल नहीं हुआ।

परमेश्वर की आज्ञा (डुबकी) की जगह मनुष्य की रीति (छिड़काव या उण्डेलना जो भी हो) को देकर जाने कितनी आत्माओं ने मसीह के सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानी है। और तो और इन बेकार विकल्पों ने बपतिस्मे के उस कार्य को ही छिपा दिया जिसका प्रतीक होने के लिए इसे दिया गया था यानी मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के लिए। मन फिराने और डुबकी में व्यक्ति पाप और संसार की ओर से मर जाता है; फिर उसे मसीह में "जीवन के नयेपन" में चलने के लिए जिलाया जाता है।[59]

यूरोप के जर्मन भाषा बोलने वाले देशों में सेवकाई में मेरे भाग लेने के समय हमारे पास कई बार ऐसे मेहमान आते थे जिन्होंने विश्वासी के मसीह में डुबकी लेने को पहली बार देखा होता था। कई बार इन अवसरों पर वे मेहमान इस चित्रण को देखकर और इसके पूरे उद्देश्य को समझकर, उसी समय मसीह का अंगीकार करके प्रभु को अपने आपको देते हुए "पानी में आने" का फैसला ले लेते थे। यीशु ने खुद भी साफ़ साफ़ कहा "बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6)। पौलुस इसी सरल से कार्य की बात कर रहा था जब उसने कहा, "क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे" (रोमियों 6:5)।

इस प्रकाश को छुपाना शर्म की बात है कि यह तो केवल आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा मसीह के मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने को फिर दिखाते हुए लोगों की आत्माओं के साथ बात करना है। बहुतों के लिए यह सांस्कृतिक परम्पराओं तथा कलीसिया द्वारा दिए गए परतों के नीचे छुपा हुआ है। यह परम्पराएं उस सीधी सी पर गहरी समझ को जो महिमा के प्रभु के अपने प्रेरितों को दी आज्ञा को उलझा देती हैं। यीशु ने राह देख रही जातियों के कानों और आंखों दोनों तक इसे पहुंचाना चाहा ताकि वे भी उसके उद्धार के अद्‌भुत अनुग्रह में साझी हो सकें (मत्ती 28:18-20)।

मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने के इस दृश्य को दिखाने के इस विचार से ज्यूरिक, स्विटजरलैंड में मिशन की तथा वहां मिशन के दौरान वहां पर पानी तक आने वाले पहले व्यक्ति की कहानी का ध्यान आता है। मिशन कार्य का आरम्भ आसान नहीं था। आधे दर्जन या इससे

अधिक लोग नहीं होंगे जो खाना पकाना सिखाने वाले स्कूल की चौथी मंजिल पर किराये के हाल में इकट्ठा होते थे जो रविवार के दिन खाली होता था। वह हॉल नगर के उद्योग क्षेत्र में था और उसमें ''प्रार्थना भवन'' जैसा लगने वाली कोई बात नहीं थी। यह और उस जगह पर केवल लिफ्ट से पहुंच पाना और वह भी लैक्चर हॉल के लम्बे लम्बे डैस्कों से सजा था, आने वाले व्यक्ति के लिए जो पहली बार दरवाजा खोलकर भीतर झांकता था एक डरावना सा दृश्य होता था।

परन्तु एक दैनिक समाचार पत्र में जो नगर के हर पते पर मुफ्त भेजा जाता था ''बाइबल की ओर वापिस'' नाम से हमारे लेखों से लोगों की जिज्ञासा बढ़ने लगी। बहुत से लोग न केवल देखने के लिए बल्कि सुनने के लिए भी आने लगे। ''उलगा'' नामक एक महिला हमारी संगति में आने लगी जो बड़े ध्यान से सुनती थी, और अधिक जानना चाहती थी। कुछ देर के बाद, हम उसके साथ अध्ययन करके उसके कई सवालों पर चर्चा करने लगे। बपतिस्मे में मसीह के साथ गाड़े जाने के बारे में रोमियों 6 और कुलुस्सियों 2 में पढ़ने पर उसने पूछा। क्योंकि उसने कभी भी किसी को डुबकी लेते हुए देखा नहीं था, ''हमें इसकी समझ कैसे लग सकती है?'' मैंने केवल खड़े होकर दिखाया कि किस प्रकार से कोई पानी में पीछे की ओर बैठकर डुबकी ले सकता है। वह समझ गई, और उसको इतना ही समझने की आवश्यकता थी। जैसा ही उसके बपतिस्मे की तैयारी हो गई, दो और लोग जो संगति में आते थे, उसी दिन पानी में उसके पीछे हो लिए और ज़्यूरिक में ''पहले फल'' बन गए।

दुख की बात है कि उलगा का पति उसके निर्णय से सहमत नहीं था और वह कई प्रकार से उसके साथ दुर्व्यवहार करने लगा। वह अपने मरने के दिन तक अड़ा रहा, सो उलगा को पता चल गया कि मसीह के लिए दुख उठाने का अर्थ क्या है। फिर भी वह अपने मरने के दिन तक विश्वासी बनी रही। ऐसा नहीं है कि उलगा कोई विशेष दान को पाए हुए थी बल्कि वह एक साधारण घरेलू स्त्री थी जब तक उसका पति जीवित रहा तब वह दुख सहती रही। उसके जीवन की सुन्दरता इस बात में भी थी कि जब तक वह ज़िंदा रही तब तक उसने अपनी वचनबद्धता को बनाए रखा और प्रभु यीशु की इस नई बनी कलीसिया के अगले वर्षों में उसके बाद आने वाले सब लोगों के लिए एक मिसाल बन गई।

यीशु की अधिकारात्मक आज्ञा को बोलकर या नमूना दिखाकर आगे बताया जा सकता है। यहां पर संदेश शारीरिक हरकत के द्वारा समझाया गया। बेशक और भी बात की गई परन्तु निश्चय ही इस महिला के मन को प्रभावित करने के लिए शारीरिक हरकत को दिखाने से बुनियादी संदेश मिल गया जिससे वह मसीह का अंगीकार प्रभु के रूप में करके बपतिस्मे में अपने पापों को धो पाया।[60]

नियम? (6:16)

इक्कीसवीं सदी की एक बुरी बात यह है कि बहुत से जवान, यहां तक कि क्रिश्चियन कॉलेजों तथा यूनिवर्सिटियों में दाखिला लेने वाले छात्र किसी भी ऐसी बात को सुनने को तैयार नहीं जिसका नियम से कुछ लेना देना हो। पौलुस ने चाहे इस बात से इनकार किया कि मसीही लोगों पर मूसा की व्यवस्था लागू होती है परन्तु इस पर उसने आज्ञा और शिक्षाएं दीं जिन्हें नई वाचा मे मानना आवश्यक है। 6:16 में परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त प्रेरित ने ''नियम'' शब्द का

इस्तेमाल असल में ''परमेश्वर के इस्राएल'' अर्थात कलीसिया के अलग किए हुए लोगों के लिए इस अर्थ में की कि जैसे नये जन्मे हुए बच्चों पर करते हैं।

''इस नियम पर चलेंगे'' की बात कहकर पौलुस हमारे साथ इस प्रकार से बात नहीं कर रहा था जैसे हम बच्चे हों। अपने प्रेरितों को संसार में सुसमाचार को पहुंचाने और जातियों को चेले बनाने की आज्ञा देते हुए प्रभु यीशु ने इन शब्दों को शामिल किया ''और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ'' (मत्ती 28:20क)। इसके अलावा इन शब्दों से पहले उसकी पक्की घोषणा है कि ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिये तुम जाओ ...'' (मत्ती 28:18, 19)।

बाइबल में पौलुस ने रोमियों 3:9-18 में पुराने नियम के कई हवाले इकट्ठे देकर बुराइयों की एक सूची दी है। केवल थोड़े से सम्पादन के बाद रोमियों 1:18-32 हमारे आज के समाचार पत्रों में पाई जाने वाली बहुत सी बातों के साथ मेल खा सकता है।

हर सभ्य समाज और संगठन के लोगों में उपयुक्त व्यवहार के लिए नियमों को मानना आवश्यक होता है। लोगों चाहे वे मसीही क्यों न हों, नियमों की आवश्यकता होती है। जब तक हमें पूरी तरह से समझाया न जाए कि आत्मा में होने वाले जीवन के लिए कैसा व्यवहार होना आवश्यक है तब तक हम जीवन के आत्मिक व्यवहार को पकड़ नहीं पाते या ऐसे लोग नहीं बन जाते जिन्हें हमारा सृजनहार नये सिरे से बनाना चाहता है। हमें नियन्त्रण में रखने या रोकने के लिए नियम आवश्यक होते हैं। इसके विपरीत वे हमें भ्रष्ट और भ्रमित लालसाओं से मुक्ति दिलाते, पाप के कठिन बोझ से छुटकारा दिलाते हैं जो हमारी आत्माओं पर बोझ होगा हैं।

एक अर्थ में ''नई सृष्टि'' जिसकी बात पौलुस ने की, हमारे पूर्वजों की अदन की स्थिति से कहीं श्रेष्ठ है, चाहे उनकी मूल अवस्था के भोलेपन में कुछ सुन्दरता आवश्यक है। अपने बचकानेपन में वे उन विनाशकारी परिणामों की कल्पना भी नहीं कर सकते थे जो उनके आज्ञा तोड़ने से उन पर आने थे। पाप का स्वाद न चखने के कारण उन्हें दोष, अनुग्रह और छुटकारे की अवधारणाओं की समझ नहीं हो सकती थी।

हां स्वर्गलोक की वाटिका में भी नियम थे यानी संसार के शासक के द्वारा दिए गए नियम। अपेक्षाकृत अपने भोलेपन में पुरुष और स्त्री ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी, जिसने उन्हें साफ़ साफ़ चेतावनी दी थी: ''तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा'' (उत्पत्ति 2:16ख, 17)।

''परमेश्वर का इस्राएल'' (6:16)

प्रसिद्ध गलतफहमी के कारण 6:16 में ''परमेश्वर के इस्राएल'' के हवाले को स्पष्ट करने की आवश्यकता है। मसीही जगत में आज बहुत से लोगों का यह मानना है कि अब्राहम की शारीरिक संतान होने के आधार पर आज भी परमेश्वर की जिम्मेदारी, पुराने नियम के लोगों के साथ की गई अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की है। इस शिक्षा को मानने वाले ''शरीर के भाव से इस्राएली'' वाक्यांश को नये नियम में प्रकट किए गए से कहीं आगे वैकल्पिक रास्ते निकालना चाहते हैं।[61]

पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि खतना किया हुआ यहूदी होना किसी की शारीरकि अवस्था से उसे परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहराता। 6:15 में उसने लिखा, ''क्योंकि न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि।'' यह ''नई सृष्टि'' केवल यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा सम्भव हुई है (6:14), जिसे आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा माना जाना आवश्यक है (3:9-14, 23-29; 5:2-7; प्रेरितों 15:1-11)।

यह दावा करने वाले गलत हैं कि वे ''परमेश्वर के इस्राएल'' के लोग हैं क्योंकि वे शारीरिक रूप में अब्राहम की संतान हैं। जो ''नियम'' यह तय करता है कि परमेश्वर की दृष्टि में असली इस्राएली कौन है, जिस पर पौलुस शांति और दया चाहता था वह मसीह में ''नई सृष्टि'' होना है। जिनका ''मसीह में बपतिस्मा'' हो गया है और वे ''नये जीवन की चाल चलने'' के लिए जी उठे हैं (रोमियों 6:3, 4) उन्हें आत्मा के साथ चलना आवश्यक है (गलातियों 5:25)। यदि कोई ''आत्मा के चलाए चलता'' है तो वह ''व्यवस्था के अधीन न'' रहा (5:18)।

कैनन (6:16)

गलातियों की पुस्तक में चाहे ''कैनन'' (प्रामाणिक) पर विचार नहीं किया गया परन्तु 6:16 में इससे मेल खाता यूनानी शब्द है। ''नियम'' का अनुवाद (*kanōn*) से किया गया है, जो इब्रानी शब्द (*qaneh*, ''केनह'' या ''सरकंडा'') से सम्बधित सामी भाषा का शब्द है। सरकंडे का इस्तेमाल कई बार नापने वाली छड़ी के रूप में किया जाता था। इसलिए यूनानी भाषा में *kanōn* में ''मानक'' या ''कसौटी'' के विचार की कल्पना की जाती है। आरम्भिक मसीही सदियों के दौरान इस शब्द का इस्तेमाल पहले ''मसीही विश्वास की नियामक शिक्षा तथा नैतिक सामग्री के लिए'' किया जाता था। परन्तु चौथी सदी तक इस शब्द को पुराने और नये नियमों में शामिल पुस्तकों की सूची के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा। ''आज यही अर्थ हावी है: 'कैनन' दस्तावेजों के उस संग्रह के लिए किया जाता है जो प्रामाणिक पवित्र शास्त्र है।''[62]

पुराने नियम के कैनन के बनने की अंतिम तिथि के रूप में, 400 ई. पू.से 200 ई. तक के अलग अलग विचार पाए जाते हैं। डी. ए. कार्सन, डग्ल्स जे. मू और लियोन मौरिस ने कहा है कि अब यह माना जाने लगा है कि पहली सदी ई. पूर्व के बाद की कोई भी तिथि इस प्रमाण के उलट है। यह लेखक इस दावे का खण्डन करते थे कि विधर्मी मार्सियन ने दूसरी सदी ई. के मध्य के आस पास नये नियम के कैनन की पुस्तकों की प्रामाणिक मसीहियत की पहली सूची प्रकाशित की:

> पौलुस के पत्र पहले से संचित रूप में प्रचलन में थे, और सम्भवतया सुसमाचार के कैनन के चारों विवरण भी। अधिक महत्वपूर्ण बात, नये नियम के पवित्र शास्त्र का विचार, निश्चित रूप से दूसरी सदी के आरम्भ में अच्छे से निर्धारित हो चुका था, देर-सवेर कैनन की सीमा की कुछ बात को पहले से मान लेता है।[63]

यीशु ने लिखित रूप में ऐसा कुछ भी नहीं छोड़ा जो आगे हम तक पहुंचा हो। परन्तु उसने यह प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा ने उसके चेलों को जो कुछ उसने अपनी सेवकाई के दौरान उन्हें सिखाया था और ''सब सत्य में'' उन्हें अगुआई देनी थी (यूहन्ना 14:26; 16:12, 13)।

यह प्रतिज्ञा उन बारहों को दी गई थी, जिनके पांव उसने धोए थे (यूहन्ना 13:1-10); क्योंकि सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण के उस भाग में उस समूह के साथ बातचीत का निर्विघ्न संदर्भ है (यूहन्ना 13—17)। इसलिए यीशु ने स्वयं अपने सुसमाचार की घोषणा का बिना किसी रुकावट के (प्रेरितों 1:1) और फिर इसका और प्रकाशन तथा प्रयोग अपने प्रेरितों को दे दिया जिन्हें उसने इस काम के लिए चुना था (इब्रानियों 2:3, 4)। परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों के साथ प्रेरितों ने नये नियम के संदेश को लिख लिया जो आज मसीही विश्वास के प्रामाणिक आधार का काम करता है (देखें इफिसियों 2:20; 3:5)।

पुराने नियम के कैनन के सम्बन्ध में नये नियम के दो हवाले इस बात को दिखाते हैं कि यीशु ने पुराने नियम के लेखों को पूरे का पूरा अनुमोदन किया था। पहला तो लूका 24:44 है जिसमें मसीह के अपने चेलों को जी उठने के बाद पहली बार दर्शन देने की बात है। उस अवसर पर उसने कहा, ''ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।'' तीन भागों वाले इस विभाजन का उद्धरण देकर यीशु यह सिखा रहा था कि उसकी मृत्यु और जी उठने से पूरी इब्रानी बाइबल को पूरा किया गया। इस संदर्भ में ''भजनों की पुस्तकों'' का ''लेखों'' के लिए इस्तेमाल हुआ है क्योंकि उस भाग का आरम्भ इसी पुस्तक से होता है। इसके अलावा मसीह से सम्बन्धित और भविष्यवाणियां लेखों की किसी भी अन्य पुस्तक से बढ़कर भजनों में ही मिलती हैं।

दूसरा हवाला जो संकेत देता है कि यीशु पूरे पुराने नियम को मानता था मत्ती 23:29-36 है। यह बताता है कि उसने परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं के साथ यहूदी अगुओं के दुर्व्यवहार के दोष को कैसे सामने लाया था। इस्राएल के इतिहास में सदियों तक यह पाप होता रहा है। अपने दोष से चाहे वे अनजान थे पर ये लोग अपने पूर्वजों से किसी भी प्रकार से अच्छे नहीं थे। इस संदर्भ में यीशु ने इन अगुओं को बताया:

> इसलिये देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं; और तुम उनमें से कुछ को मार डालोगे और क्रूस पर चढ़ाओगे, और कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। जिस से धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकर्याह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा (मत्ती 23:34, 35)।

हाबिल की मृत्यु की बात इब्रानी कैनन की पहली पुस्तक में दर्ज है (उत्पत्ति 4:8), जबकि जकर्याह की मृत्यु की बात अंतिम पुस्तक में मिलती है (2 इतिहास 24:20, 21)। (दूसरा इतिहास इब्रानी बाइबल की पुस्तकों में अंतिम है।) इसलिए यीशु ने आरम्भ से लेकर अंत तक, परोक्ष रूप में सम्पूर्ण पुराने नियम के कैनन पर स्वीकृति की अपनी मोहर लगा दी।

मत्ती 23:29-36 भी नये नियम के लिखे जाने की बात पहले से बताता है, जो चेलों के जीवनकाल में ही पूरी हो जानी थी (पहली सदी)। यीशु ने कहा कि वह ''भविष्यवक्ताओं, बुद्धिमानों और शास्त्रियों'' को भेजने वाला था। जिस प्रकार से इस्राएल के अगुओं ने पुराना नियम

लिखने वाले भविष्यवक्ताओं को सताया था, उसी प्रकार से पहली सदी के उन के प्रतिरूपों ने प्रेरितों तथा भविष्यवक्ताओं को सताना था जिन्होंने नया नियम लिखना था।

यह पूरा मामला कि पुराने और नये दोनों नियमों का कैनन पवित्र शास्त्र के प्रामाणिक और पक्के दस्तावेज के रूप में कैसे माना जाने लगा, बाइबल अध्ययन की सरल बातों नहीं है। इसी प्रकार से यह प्रमाण इस बात का संकेत देता है कि पुराने नियम का कैनन मसीह के समय से पहले पक्का हो गया था। इसके अलावा नये नियम का कैनन पूरी तरह से चौथी सदी के अंत तक तय हुआ था। परन्तु सत्ताइस में से अधिकतर पुस्तकों को इससे बहुत पहले परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पवित्र शास्त्र के रूप में व्यापक रूप में स्वीकार किया जाने लगा था। इन पुस्तकों में से अधिकतर म्यूरेटोरियन फ्रैग्मैंट में मिलती हैं जो सम्भवतया दूसरी सदी के अंत का है।[64] पुस्तकों की पूरी सूची (चाहे इनमें से कुछ विवादास्पद थीं) कलीसिया के इतिहासकार यूसब्यूस के लेखों में मिलती हैं, जो चौथी सदी के आरम्भ के हैं।[65] सत्ताइस पुस्तकों का कैनन अथनेसियुस के उन्तालीसवें उत्सव पत्र में मिलता है (367 ई.)।[66] इस कैनन को कौंसिल ऑफ़ हिप्पो (393 ई.) में मानयता दी गई और थर्ड कौंसिल ऑफ़ कारथेज़ में दोहराया गया (397 ई.)।[67]

दाग (6:17)

गलातियों के नाम अपने पत्र के अंत में आते पौलुस ने लिखा कि वह अपनी देह में ''यीशु के दागों को लिए फिरता'' है। ''दाग'' के लिए यूनानी शब्द (*stigma*) है जिसको अंग्रेज़ी में हू-ब-हू लिखा जाता है। ऐसे दाग चाहे विशेष रूप से अपमान का संकेत होते थे परन्तु पौलुस अपने दागों (निशानों और चोटों) के लिए एक अलग दृष्टिकोण रखता था, क्योंकि उनका सम्बन्ध यीशु के साथ था। दूसरे लोग चाहे उनसे भागते हों, परन्तु वह उन दागों को मसीह के दास के रूप में अपनी वफ़ादार सेवा के प्रमाण के रूप में देखता था।

दाग से व्यक्ति, परिवार, समुदाय या लोगों के कुल को नुकसान हो सकता है। जब मैं बड़ा हो रहा था, उस समय हमारी एक रिश्तेदार थी जो देश के उस भाग में जाया करती थी जो स्वास्थ्य के लिए प्रसिद्ध था। वह वहां ''स्वास्थ्य विश्राम'' के लिए कई कई हफ्ते रहा करती थी। परन्तु जब हम बच्चे यह पूछते कि वह ऐसा क्यों करती है तो वह कभी कोई सीधा उत्तर नहीं देती थी जिससे हम सब की जिज्ञासा और बढ़ जाती। कॉलेज में जाने पर हमें पता चला कि उसके फेफड़ों पर ''एक निशान'' था। अंत में पता चल गया कि उसे टीबी थी (या इसे आम तौर पर ''क्षय रोग'' कहा जाता था)। स्पष्टतया उसे जो भी रोग था अंत में वह ठीक हो गई और काफ़ी बूढ़ी होकर मरी। इसे छुपाकर रखने का कारण अंत में हमें पता चला कि यह था कि टीबी का शक भी पूरे परिवार के लिए ''दाग'' हो सकता था जो निर्धनता और गंदगी के साथ समाज में दण्डात्मक कार्य बन जाता। टीबी ग्रस्त व्यक्ति को कई संगठनों या सामाजिक पदवियों में जाने या कई नौकरियों से इनकार किया जा सकता है।

कई मामलों में जातीयता किसी के लिए उसके जीवन भर का ''दाग'' हो सकती है। 1930 और 1940 के दशकों में जर्मनी में यदि किसी पर उसकी नसों में यहूदी लहू होने का संदेह हो जाता तो यह ''दाग'' उसके साथ जुड़ जाता था। यहूदियों के विरोध ने एक खतरनाक बीमारी की तरह काम किया जिससे लाखों अच्छे तंदरुस्त लोग मार डाले गए। ऐसा सामाजिक ''दाग''

किसी एक स्थान और समय के लोगों तक सीमित नहीं है।

मसीह के लिए दुख सहना (6:17)

पौलुस ने मसीह के दास के रूप में अपने ''दागों'' को खुशी से सह लिया (6:17)। उसने कुलुस्सियों को लिखा, ''अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिए, अर्थात कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं'' (कुलुस्सियों 1:24)। नये नियम में यह सबसे अनोखी बातों में से एक है। केवल प्रभु के लिए ही दुख सहना काफ़ी नहीं था। पौलुस को भी यीशु की खातिर तकलीफें और मुसीबतें सहनी पड़ीं। इससे उसे आनन्द मिला! वह अपने भाग की शारीरिक पीड़ा और दुख को अपने शरीर में अनुभव करने को तैयार था जो संसार में यीशु की देह यानी कलीसिया के लिए पहले से ठहराया गया था।

हमारे लिए आश्चर्य की बात हो सकती है कि मसीही गुलामों को सम्बोधित करते हुए पतरस ने उन्हें अपने मालिकों के अधीन और उनके अन्यायपूर्वक व्यवहार को सहने को तैयार रहने को कहा। उसने लिखा:

> पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो (1 पतरस 2:20ख, 21)।

क्या व्यवहार का यह नियम केवल गुलामों के लिए था या पूरी कलीसिया के लिए यह संदेश था? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमें इस तथ्य में पौलुस के आनन्द करने के शब्दों को याद रखने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने हमें अपनी संतान के रूप में ग्रहण कर लिया है, ''और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब हम उसके साथ दु:ख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं'' (रोमियों 8:17)। ये शब्द यकीनन प्राचीन के समय के गुलामों को ही नहीं कहे गए थे बल्कि वे हम सब के लिए भी हैं जो प्रभु का नाम लेते हैं, जैसे पौलुस लेता था, पुनरुत्थान की आशा में महिमा पाएं। मसीह के गुलाम के रूप में उसके अथक परिश्रमों और उम्मीदों के पीछे प्रेरक बल यही था। जब हम मसीह के लिए दुख उठाते हैं तो हम उस स्थिरता और दृढ़ता में साझी होते हैं जिसके साथ परमेश्वर के इस सेवक ने आने वाले संसार में पुनरुत्थान की आनन्दपूर्ण उम्मीद के साथ पीड़ा, दुख और मृत्यु का सामना किया।

टिप्पणियां

[1]यूहन्ना 7:53—8:11 की धर्मशास्त्रीय गवाहियां, यूनानी हस्तलिपियां जहां मिलती हैं, उन्हें आम तौर पर सबसे पुरानी और बेहतरीन नहीं माना जाता। फिर भी यह वचन कुछ प्राचीनतम लातीनी और सीरियाई हस्तलिपियों में मिलता है। यह लगभग सभी आधुनिक अंग्रेज़ी अनुवादों में भी मिलता है। [2]केनथ एल. बोल्स, *गलेशियंस एंड एफिशियंस,* द कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1993), 160. [3]रॉबर्ट एल. जॉनसन, द *लैटर ऑफ़ पॉल्स टू द गलेशियंस,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट

कं.,1969), 166. [4]देखें रोमियों 15:1; 1 कुरिन्थियों 8:13; 2 कुरिन्थियों 11:28, 29; गलातियों 6:1. [5]देखें रोमियों 12:3; 1 कुरिन्थियों 8:2; 2 कुरिन्थियों 10:12, 18. [6]जॉनसन, 167. [7]ज़िनोफोन *मेमरोबिलिया* 3.13.6. [8]किसी विशेष नगर में प्रचार करने के दौरान पौलुस ने स्थानीय लोगों से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार नहीं की (1 कुरिन्थियों 9:18)। वह चाहता था कि उन्हें अनुसरण करने के लिए अपने हाथ से काम करने का नमूना दे (प्रेरितों 20:33-35; 1 थिस्सलुनीकियों 2:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:7-9), और इस झूठी आलोचना से बचना चाहता था कि वह केवल पैसे के लिए प्रचार करता है। जब इन बातों पर कोई सवाल नहीं था तब वह अन्य नगरों की मण्डलियों से कोई सहायता नहीं लेता था (2 कुरिन्थियों 11:7-9; फिलिप्पियों 4:10-20)। [9]देखें 1 कुरिन्थियों 3:18; इफिसियों 5:6; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3; 1 यूहन्ना 3:7. [10]वाल्ट बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश - लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 660.

[11]बेन विदरिंग्टन III, *ग्रेस इन गलेशिया: ए कमैंट्री ऑन सेंट पॉल'स लैटर टू द गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1998), 431. [12]रिचर्ड एन. लॉन्गनेकर, *गलेशियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 41 (नैशविल्ले: थॉमस नैलसन पब्लिशर्स, 1990), 280-81. [13]बाउर, 272. एक और सम्भावित परिभाषा ''बड़ी कठिनाई में डरना'' हो (देखें लूका 18:1; 2 कुरिन्थियों 4:1, 16; इफिसियों 3:13; 2 थिस्सलुनीकियों 3:13.) [14]वही, 694. [15]इस क्रिया का शाब्दिक रूप *graphō* है जिसका अर्थ है ''लिख।'' [16]इस उपयोग को ''प्रिय'' शब्द के साथ पत्र का आरम्भ करने के साथ मिलाया जा सकता है। आज हम में से अधिकतर लोग सम्बोधन के लिए इसी शैली का इस्तेमाल करते हैं, चाहे उन लोगों को दिख रहे हों जिन्हें हम व्यक्तिगत रूप में जानते नहीं हैं। [17]NASB में चाहे यह स्पष्ट नहीं है परन्तु रोमियों 16:22 में तिरतियुस ने गलातियों 6:11 में पौलुस की तरह पत्री के अनिर्दिष्टकाल का इस्तेमाल किया। मुख्य अंतर यह है कि तिरतियुस ने निर्देशात्मक क्रिया के बजाय कृदंत रूप का इस्तेमाल किया। [18]अलग अलग विद्वानों द्वारा पौलुस के ''बड़े बड़े अक्षरों'' को उसके ''टहलू'' कहा उसकी ''कमज़ोर नज़र'' या ''अपनी बात पर ज़ोर देने'' की इच्छा बताया गया (बोल्स, 168)। [19]एवरेट फरग्यूसन, *बैंकग्राउंडस ऑफ अर्ली क्रिश्चियनिटी,* 2रा संस्क (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1993), 121. [20]प्रेरितों 15:22—18:5 में जिसे ''सिलास'' के रूप में जाना गया, यह ''सिलवानुस'' थिस्सलुनीके के पत्रों के लिए पौलुस के लिपिक का काम किया (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। वह सम्भवतया 1 पतरस 5:12 वाला पत्र का लिपिक ही है।

[21]देखें 1 कुरिन्थियों 16:21; कुलुस्सियों 4:18; फिलेमोन 19 में पौलुस की अपनी लिखाई ने दो काम किया। इससे पत्र प्रमाणिक बन गया और उसने प्रोनोट पर उसके हस्ताक्षर का काम किया। (उनेसिमुस द्वारा फिलेमोन को पहुंचाई गई किसी भी हानि को पूरा करने के लिए।) [22]लियोन मौरिस, *द एपिस्टल्स ऑफ पॉल टू द थियलोनियंस,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1956), 151. [23]बाउर, 411. [24]देखें प्रेरितों 2:38, 39; रोमियों 2:28, 29; 9:6-8; कुलुस्सियों 2:11-14. [25]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 269. [26]सिसेरो *इन डिफेंस ऑफ रेबिरस* 5.16. [27]जे. बी. लाइटफुट, *द एपिस्टल ऑफ सेंट पॉल टू गलेशियंस,* क्लासिक कमैंट्री लाइब्रेरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 223. ब्रूस ने यह भी दावा किया कि यहां पर एक सर्वनाम का पूर्वपत्र ''क्रूस'' के होने की अधिक सम्भावना (ब्रूस, *गलेशियंस,* 271.) [28]देखें रोमियो 14; 15; 1 कुरिन्थियों 8:1-13; 10:31-33. [29]यूहन्ना 3:5 में ''जल'' सचमुच में पानी है और पानी के अलावा इसका कोई और अर्थ बनाने काकोई तर्कसंगत ढंग नहीं है। वचन के अनुसार बपतिस्मा केवल पानी में ''गाड़े जाना'' (रोमियों 6:4; कुलुस्सियों 2:11, 12) निश्चय ही प्रभु का अपना, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की तैयारे के काम का और प्रेरितों के काम में ग्रेट कमीशन के बपतिस्मे के कई नमूनों का यही तरीका था। हम उनके लिए परेशान हैं जो आज मसीह के संदेश का प्रचार करते हैं और इस विषय पर या तो खामोश रहते हैं या अत्याधिक काल्पनिक व्याख्याएं ढूंढ़ते हैं जो यीशु के प्रेरितों द्वारा किए जाने वाले प्रचार और व्यवहार दोनों से बचने के लिए। [30] पपृष्ठ पर देखें *प्रासंगिकता: कैनन,* पृष्ठ 143-45

[31]NASB की तरह अन्य कई अंग्रेज़ी संस्करणों में 6:16 में इस विशेष *kai* किया गया है (KJV; ASV; NKJV; NAB; NEB; GNT; NRSV; CJB; ESV)। [32]बाउर, 495; एफ. ब्लास एंड ए. डेबरनर, *ए ग्रीक ग्रामर ऑफ द*

न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर, अनुवाद व संशोधन रॉबर्ट डब्ल्यू. फंक (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1961), 228 (नं. 442.9)। [33]इस वाक्यांश का अनुवाद ''*यानी,* परमेश्वर का इस्राएल'' अर्थात ''परमेश्वर का इस्राएल'' भी किया जा सकता है। अन्य संस्करण संयोजक को हटाकर किसी अर्थ पर पहुंचते हैं (RSV; REB; CEV; NLT)। [34]आर. एलन कोल, *द एपिस्टल ऑफ पॉल टू द गलेशियंस,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1965), 183-84. [35]जस्टिन मार्टिर *डायलॉग विद ट्रायफो* 11. [36]जॉन क्रिसोसटॉम *कमैंट्री ऑन गलेशियंस* 6.15, 16. [37]''इस्राएल'' के रूप में कलीसिया का एक और सम्भावित हवाला रोमियों 11:26 में मिलता है, चाहे इस वचन की व्याख्या कठिन है। [38]लॉन्गनेकर, 300. [39]स्पष्टतया यहूदी लोग गुलामों पर दाग या ठप्पा नहीं लगाते थे। परन्तु जीवन भर स्वेच्छा से गुलाम बनना चुनने वालों के एक कान में सुतारी से छेद करके ''कान पर निशान'' लगाया जाता था (निर्गमन 21:5, 6; व्यवस्थाविवरण 15:16, 17)। [40]''नम्रता'' (*prautēs*) के व्यवहार का व्यवहार जिसका अनुवाद ''दीनता'' या ''विनम्रता'' भी किया जाता है, उन लोगों में होनी आवश्यक है जो कलीसिया के अनुशासन जैसे इतने संवेदनशील और गम्भीर मसले को देख रहे थे। जैसा पहले कहा गया था, ''सम्भालो'' के लिए यूनानी शब्द (*katartizō*) का अर्थ बुनियादी तौर पर टुटी या फट गई चीज़ को ''दुरूस्त करना,'' ''मरम्मत करना'' है जैसे मछली पकड़ने के बाद याकूब और यूहन्ना ''अपने जालों को सुधार रहे थे'' (मत्ती 4:21)। इसकी आत्मिक प्रासंगिकता 1 कुरिन्थियों 1:10 और 1 थिस्सलुनीकियों 3:10 में मिलती है जहां इसका इस्तेमाल कलीसिया में सम्बन्धों के लिए है जिन्हें ''मरम्मत'' की आवश्यकता है ताकि संसार में अच्छी तरह से काम कर सकें और उसके मिशन को पूरा कर सकें। जिस प्रकार से जाल के फट जाने पर मछली नहीं पकड़ी जा सकती उसी प्रकार से यदि लोग फूट और दलबंदी के कारण डुब जाएं तो लोगों को ''पकड़ने'' के ईश्वरीय कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता (देखें मत्ती 5:14-16; यूहन्ना 13:34, 35)।

[41]कलीसिया के अनुशासन तथा संगति में से निकाले जाने के सम्बन्ध में, देखें 1 कुरिन्थियों 5:5, 11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 13-15; तीतुस 3:9-11; 2 यूहन्ना 9, 10. [42]कई अन्य संस्करणों के साथ साथ NASB में इन दोनों वाक्यांशों का अनुवाद निश्चित उपपद ''the'' के साथ किया है चाहे यूनानी धर्मशास्त्र में यह नहीं मिलता। [43]हेनरी जॉर्ज लिडले एंड रॉबर्ट स्कॉट, *ए ग्रीक इंग्लिश - लैक्सिकन,* नौवां संस्क., संशो. व अतिरिक्त भाग के साथ विस्तार, संशो. हेनरी स्टुअर्ट जोन्स एंड रॉड्रिक जेकनीज़ (ओक्सफोर्ड: क्लेरेडन प्रैस 1968), 570. [44]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. ग्रेहर्ट किट्टल, अनु. व संशो. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 4:1087 में डब्ल्यू. गटबोर्ड, *"ennomos."* [45]देखें मत्ती 22:36-40; यूहन्ना 13:34, 35; रोमियों 13:8-10; याकूब 2:8, 12. [46]देखें मत्ती 16:27; 25:31-46; 2 कुरिन्थियों 5:10; इफिसियों 6:5-9; प्रकाशितवाक्य 20:11-13; 22:12. [47]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. ग्रेहर्ट किट्टल, अनु. व संशो. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 4:1086 में डब्ल्यू. गटबोर्ड, *''anomia ''* [48]देखें मत्ती 7:12; 22:36-40; रोमियों 13:8-10. [49]देखें प्रेरितों 2:44-47; 4:32-37; 6:1-6. [50]फ्रेड ए. फिलमोर, ''सोइंग द सीड ऑफ द किंग्डम,'' *सौंग्स ऑफ फेथ एंड प्रेज़,* संक. व संपा. अल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।

[51]नोल्स सा, ''ब्रिंगिंग द सिवस,'' *सौंग्स ऑफ द चर्च,* संक. व संपा. अल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। [52]देखें गलातियों 1:6-10; रोमियों 16:17; 1 तीमुथियुस 6:3-5; 2 यूहन्ना 10. [53]देखें रोमियों 14:1—15:7; 1 कुरिन्थियों 8:1-13; 10:23-33. [54]देखें प्रेरितों 24:17; रोमियों 15:25-28; 1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 8; 9. [55]देखें यशायाह 22:22; मत्ती 16:18, 19; प्रेरितों 2:14, 37-41. [56]''पतरस'' अरामी नाम ''कैफा'' का यूनानी शब्द था। दोनों का अर्थ ''चट्टान'' होता है। [57]देखें व्यवस्थाविवरण 10:12-16; 30:4-6; यिर्मयाह 9:25, 26; फिलिप्पियों 3:2, 3; कुलुस्सियों 2:11-14. [58]ग्रीक ऑथोडॉक्स चर्च को चाहे केवल डुबकी के रूप में बपतिस्मे के अर्थ की सही समझ है, परन्तु इसके लोग आम तौर पर गलत लोगों को (नवजात शिशुओं को जो पाप से अनजान हैं और विश्वास नहीं कर सकते) बपतिस्मा दे देते हैं। [59]देखें रोमियों 6:1-8; गलातियों 3:26-29; कुलुस्सियों 2:9-13. [60]देखें प्रेरितों 2:21, 37-41; 22:16; 1 कुरिन्थियों 6:11; इब्रानियों 10:19-23.

[61]1 कुरिन्थियों 10:18 के यूनानी धर्मशास्त्र में यह वाक्यांश मिलता है। गलातियों 4:23, 29 में भी यह विचार मिलता है। [62]डी. ए. कारसन, डग्लस जे. मू, एंड लियोन मौरिस, *एन इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1992), 487. [63]वहीं, 492. [64]एफ. एफ. ब्रूस, द *कैनन ऑफ़ स्क्रिप्चर* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1988), 158-61. [65]यूसब्युस *एक्लेस्टिकल हिस्ट्री* 3.3. [66]अथेनेसियुस *लैटर* 39.5. [67]ब्रूस, *कैनन,* 232-33.